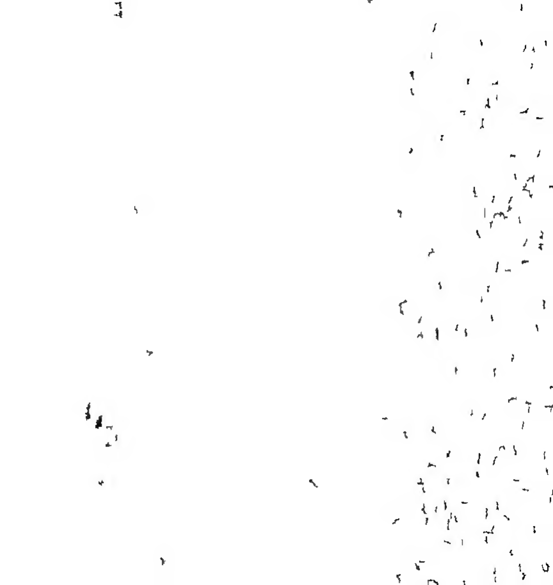


सम्पादकीय

आधुनिक इतिहास एटलस अंक की योजना बहुत पहले की गई थी। बड़ी तेजी के साथ बदलने वाले देशों की वर्तमान स्थिति को समझने के लिये हिन्दी में एक भी पुस्तक न थी। दूसरे देशों की रोजमर्रा की जटिल समस्याओं का समझना अपने देश-वासियों के लिये अत्यन्त आवश्यक है। इसीलिये "भूगोल" के पन्द्रहवें वर्ष के उपलक्ष में यह विशेषांक पाठकों की सेवा में भेंट किया जाता है। दैनिक अखबार पढ़ने वालों और संसार की घटनाओं से रुचि रखने वालों को प्राय: प्रति दिन आधुनिक इतिहास-एटलस की आवश्यकता होगी। इसीलिये इस अंक को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। प्रत्येक नक़्शे के सामने उसका विवरण है। पहले "भूगोल" का गंगाङ्क इसी जुलाई में और यह अंक आगामी जनवरी, १९३९ में प्रकाशित करने का विचार था। पर कुछ आकस्मिक कारणों से गंगा अंक तयार न हो सका। अत: क्रम बदलना पड़ा। अब गंगाङ्क आगामी (१९३९) जनवरी में पाठकों की सेवा में भेजा जायगा।

प्रस्तुत अंक बड़ी जल्दी में निकालना पड़ा। इससे तीन नक़्शे (पेलेस्टाइन, ईरान-बरमा-स्याम) पुराने देने पड़े। एक दो और त्रुटियाँ रह गई। फिर भी यदि पाठकों ने इसे पसन्द किया तो प्रतिवर्ष इसकी नई आवृत्ति निकाली जा सकेगी। इससे प्रतिवर्ष देशों के प्रधान परिवर्तनों को पाठक एक सामयिक एटलस की सहायता से समझ सकेंगे।

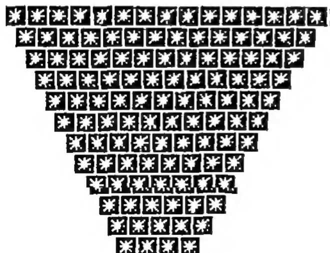
इस अंक की तयारी में महाशय होराविन की करेन्ट हिस्टरी एटलस और मोमैन की न्यूवर्ल्ड आफ टुडे से बड़ी सहायता मिली। हम दोनों ही सज्जनों के ऋणी हैं।

विषय-सूची

विषय | पृष्ठ



आधुनिक इतिहास एटलस



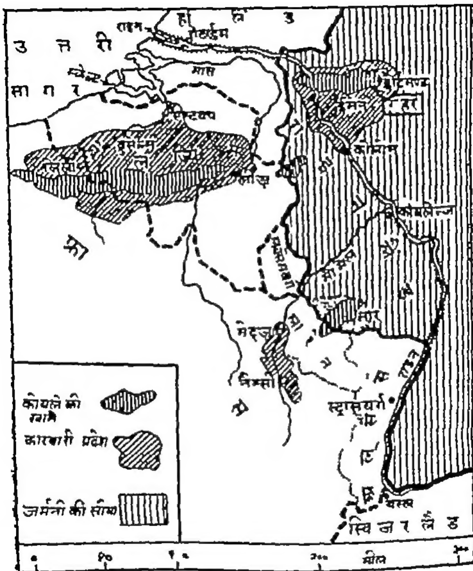
डेन्मार्क को
बर्लिन
ड्रेसडेन
प्राग
म्युनिक
चेकोस्लोवाकिया
पोलैंड
पूर्व प्रशा
फ्रांस
यह प्रदेश सन् १९१८ में
जर्मनी से ले लिया गया
वर्तमान जर्मनी सीमा

१—वर्सेल्स की सन्धि

बड़ी लड़ाई ने योरुप के राजनैतिक नक्शे को एकदम बदल दिया। इतने भारी परिवर्तन यहाँ सदियों में नहीं हुए थे। यहाँ की राजनैतिक सीमायें राष्ट्रपति विल्सन के सिद्धान्त के अनुसार राष्ट्रीयता के आधार पर की गई थीं। पर इनसे योरुप का गहरा आर्थिक धक्का पहुँचा। इस सन्धि के अनुसार पश्चिमी सीमा पर जर्मनी ने यूपेन और मलमेडी बेल्जियम को सौंप दिये। अल्सेस लारेन का प्रान्त फ्रांस को मिला। इसके सिवा हुआ सार बेसिन पहले लीग के अधिकार में रख दिया गया। पन्द्रह वर्ष के बाद १९३५ में जब लोकमत लिया गया तब ९०·८ फीसदी लोगों ने जर्मनी के पक्ष में मत दिया।

उत्तर में श्लेस्विग का कुछ भाग डेन्मार्क को दिया गया। डेन्मार्क बड़ी लड़ाई में तटस्थ रहा।

पूर्व की ओर ईस्ट प्रशा के उत्तर में मेमलर्लैंड पहले लीग को सौंपा गया। फिर १९२३ में यह लिथुएनिया को दे दिया गया। वेस्ट प्रशा और पोसन से पोलैंड बना। अपर साइलेशिया के भाग्य का निर्णय लोकमत से किया गया। साइलेशिया का कुछ भाग चेकोस्लोवेकिया को मिल गया।



कोयले की खानें
जर्मनी की सीमा
मील
स्ट्रासबर्ग

२—जर्मनी की पश्चिमी सीमायें

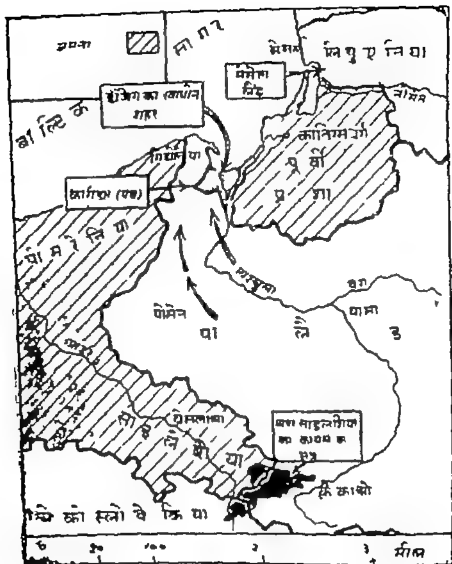
उत्तरी फ्रांस, बेल्जियम, रूहर, सार और लॉरेन के कोयले और लोहे के प्रदेश में राइन और उसकी सहायक मोसेल नदी और मूज़ और स्कल्ट नदियां प्राकृतिक जलमार्ग बनाती हैं। यहाँ पर कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है। राजनैतिक सीमायें लगातार सदियों से बदलती रही हैं। बाल शहर से लेकर स्ट्रासबर्ग से कुछ आगे तक राइन नदी लगभग १०० मील तक (बायें किनारे पर) फ्रांसीसी नदी हो जाती है। उसके आगे ३०० मील तक यह जर्मन नदी बन जाती है। लेकिन राइन का मुहाना हॉलैंड में है। राष्ट्रीय सीमाओं को अलग करके यदि इस ओर आर्थिक सीमायें निर्धारित की जायें तो इधर के झगड़े सुलझ सकते हैं।

वर्सेल्स सन्धि के अनुसार फ्रांस और बेल्जियम की सीमा के पास वाले राइनलैंड में सेना रखने की मनाही कर दी गई थी। लेकिन १९३६ ई० में जर्मन फौजें यहां आकर डट गईं।


मॉस्को
बर्लिन०
०पेरिस
०कीव
र ू मा नि या

३—जर्मनी के पड़ोसी

फादरलैंड (पितृभूमि) के झंडे के नीचे मध्य योरप के सब जर्मन लोगों को इकट्ठा करना जर्मन नाज़ी लोगों का प्रधान उद्देश्य है। हर हिटलर की इस घोषणा से जर्मनी के कमज़ोर पड़ोसी डरने लगे हैं। अल्प संख्या में कुछ जर्मन लोग हॉलैंड स्विट्ज़रलैंड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, रूमानिया, पोलैंड और लिथुएनिया में रहते हैं। इनके अतिरिक्त आस्ट्रिया एक जर्मन राष्ट्र हो गया है। केवल वहाँ के जर्मन अधिकतर रोमन कैथोलिक हैं। इस समय जर्मनी की विदेशी नीति पश्चिमी सीमा को न छेड़ने की है। लेकिन डेंज़िग, मेमल और पोलिश कॉरीडार को जर्मन लोग यथाशीघ्र सुधारना चाहते हैं। नाज़ी नेता रूस से यूक्रेन को भी अलग करना चाहते हैं। इस प्रदेश को व पोलिश कॉरीडार के बदले में पोलैंड को देना चाहते हैं अथवा वहाँ जर्मनी द्वारा संरक्षित स्वराज्य स्थापित करना चाहते हैं यह स्पष्ट नहीं है।



४—जर्मनी की पूर्वी सीमा और पोलिश कारीडार

पोलिश कारीडार २० मील चौड़ी ज़मीन की पट्टी है। पोलैंड का समुद्र तक पहुँचने का मार्ग देने के लिए यह प्रदेश पिछली लड़ाई के बाद पोलैंड को दे दिया गया। इस पट्टी की प्रधान नदी विश्चुला है। इसके दोनों ओर पोल लोग बसे हैं। वास्तव में पोल लोग विश्चुला के निकास से मुहाने तक फैले हुए हैं। विश्चुला सब तरह से पोलैंड की नदी है। लेकिन पोलिश कारीडार जर्मनी के ईस्ट (पूर्वी) प्रशा को समूचे देश से अलग करती है और जर्मनी के पेट में छुरी की तरह घुसी हुई है। यदि समुद्र तट की एकता रक्खी जाय तो पोलैंड के साथ अन्याय होता है और पोलैंड के लोग दो भागों में बट जाते हैं। यदि नदी की एकता रक्खी जाय तो जर्मन प्रदेश दो भागों में बट जाता है। डैंज़िग बन्दरगाह में जर्मन लोगों की प्रधानता है। पिछली लड़ाई के बाद लीग (राष्ट्र संघ) की मातहती में यह एक स्वाधीन शहर बना दिया गया। इस समय डैंज़िग का स्थानीय शासन नाज़ी दल के हाथ में है। इस बन्दरगाह से बचने के लिये पोलैंड ने गिडीनिया नाम का अपना एक अलग बन्दरगाह बनाया। गिडीनिया बन्दरगाह का व्यापार बाल्टिक तट के दूसरे बन्दरगाहों से कहीं अधिक बढ़ गया है।

जर्मनी की पूर्वी सीमा के दक्षिणी सिरे पर अपर साइलेशिया की कोयले की खानें हैं। १९२१ के लोकमत के अनुसार इस प्रदेश का सब से अधिक महत्वपूर्ण भाग पोलैंड को मिल गया।


फिनलैंड
लेनिनग्राड
एस्टोनिया
मास्को
मिन्सक
कीव
यु क्रे न
बसारेबिया
ओडेसा
रू मा नि या
यह प्रदेश जो
सन् १९१८-२१ में
रूस से छिन गया
मील

५—बड़ी लड़ाई में रूस के खोये हुए प्रदेश

बड़ी लड़ाई में रूस हारा नहीं था। लेकिन जब यहाँ क्रान्ति हुई तो उसके मित्र देश रूस से नाराज़ हो गये। वर्सेल्स की सन्धि में रूस का कोई प्रतिनिधि नहीं लिया गया। १९१८ में जर्मनी ने रूस के साथ ब्रेस्ट लिटोव्स्क की सन्धि जबरदस्ती करी थी। इस सन्धि के अनुसार जो राज्य जर्मनी के संरक्षण में बनाये गये थे। वे अलग स्वतन्त्र राष्ट्र बना दिये गये। इस प्रकार लेनिनग्रेड के पड़ोस को छोड़ कर रूस का समस्त बाल्टिक तट छिन गया और फिनलैंड, एस्टोनिया, लैटविया, और लिथुएनिया के स्वतन्त्र राष्ट्र बन गये। भीतर की ओर रूस का बहुत बड़ा भाग पोलैंड को मिल गया। दक्षिण की ओर बेसारेबिया का प्रान्त रूमानिया ने छीन लिया। फिर भी रूस हथियारों के ज़ोर से इन प्रदेशों पर फिर से अधिकार कर लेने के पक्ष में नहीं है।

फि न लैं ड
पस्कोव
मेमल
कोवनो
पो लैं ड
मील

६—बाल्टिक तट की रियासतें

१९०९ ई० की रूसी क्रान्ति के बाद एस्थोनिया, लिथुएनिया और कारलैंड के रूसी बाल्टिक तट के प्रान्त ज़ार के साम्राज्य से अलग होने का प्रयत्न करने लगे। रेवल, रीगा और लिबाउ के प्रसिद्ध बन्दरगाहों को बचाने के उद्देश्य से ज़ारशाही ने इन प्रान्तों को रूसी बनाने का भार प्रयत्न किया। १९१८ के आरम्भ में इस सारे बाल्टिक प्रदेश पर जर्मन फौजों का अधिकार हो गया। इसी समय लेनिन की साम्यवादी सरकार ने ब्रेस्ट लिटोव्स्क की सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये। बोल्शेविक शक्ति को घेरने के लिये मित्र दलों ने जर्मन [illegible] बनाई हुई नई रियासतों को स्वीकार कर लिया। एस्थोनिया में पुराने [illegible] निया प्रान्त और आधा लिवोनिया प्रान्त शामिल हो गया। [illegible] लिवोनिया और समस्त कोरलैंड मिला दिया गया। लिथुएनिया में पूरा कोवनो प्रान्त और विल्ना प्रान्त का कुछ भाग शामिल है। रेवल और रीगा के बन्दरगाहों के द्वारा पश्चिमी रूस के बहुत बड़े भाग का व्यापार हो सकता था।

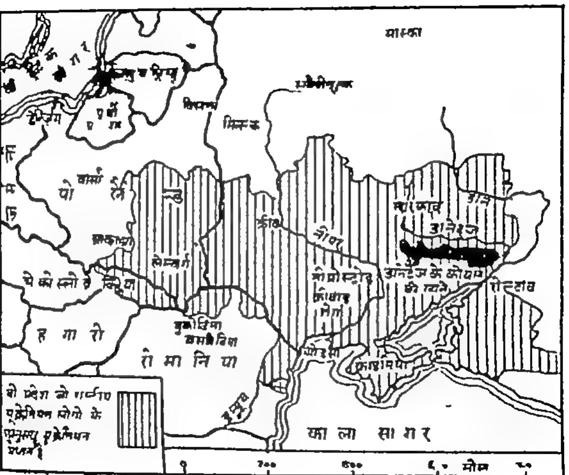
सार के चुनाव की विजय से प्रोत्साहित होकर जर्मनी की नाज़ी सरकार मेमल को फिर वापिस लेने का प्रयत्न कर रही है। लिथुएनिया की कचहरी में मेमल में रहने वाले जर्मनों पर राज्य विद्रोह का जो मुकदमा चला उस से जर्मनी और लिथुएनिया में दुश्मनी बढ़ गई। इसी बीच १९३४ में बाल्टिक तट के तीनों राष्ट्रों ने जनवा की सन्धि पर हस्ताक्षर करके आपस में ऐसी एकता कर ली कि इन सब की विदेश सम्बन्धी नीति एक रहेगी।

पोलैंड की प्रारम्भिक पूर्वी सीमा जिसे सुप्रीम कौंसिल ने १९१९ में निश्चित किया था

७—पोलैंड की पूर्वी सीमा

वर्सेल्स की सुप्रीम काउंसिल (प्रधान समिति) में पोलैंड की पूर्वी सीमा उस रेखा को बनाया था जो ब्रस्ट लिटाव्स्क से उत्तर और दक्षिण की ओर जाती है। पोलिश यूक्रेन पोलैंड के प्रभुत्व में एक अलग स्वाधीन राज्य बनाया गया। इस सीमा के अन्दर अधिकतर पोलिश लोग रहते थे। १६२० में पोलैंड और रूस की लड़ाई के बाद पोलैंड की पूर्वी सीमा बहुत आगे बढ़ गई। इससे व्हाइट (श्वेत) रूसी और यूक्रेन निवासी और यहूदी लोग पोलैंड की प्रजा बन गये। पोलैंड के भूतपूर्व राष्ट्रपति पिलसुदस्की के शासन काल में अल्पसंख्यक पोलिश यूक्रेन के लोगों ने स्वाधीन होने के लिये लीग (राष्ट्र संघ) को अर्जी दी पर इसका कोई फल न हुआ।

१६२० में पोलैंड की फौज ने लिथुएनिया पर हमला किया, और वहाँ की राजधानी विल्ना और नीमेन नदी के उत्तर वाले प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार रूस और लिथुएनिया के बीच में पोलैंड का प्रदेश घुस गया। पोलैंड की इस डकैती को लिथुएनिया ने अब तक स्वीकार नहीं किया और नीमन नदी और मेमल बन्दरगाह को पोलैंड के व्यापार के लिये बन्द कर दिया। राष्ट्रसंघ (लीग) ने इस झगड़े का सुलझाने की काफी कोशिश की पर इसमें उसे कोई सफलता नहीं मिली।

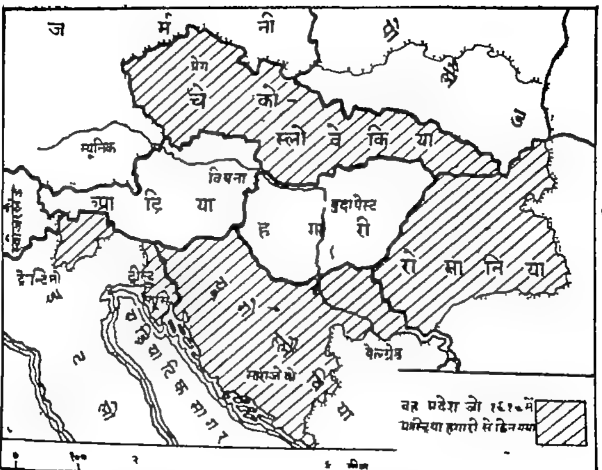


रो मा नि या
का ला सा ग र
मील

८—यूक्रेन

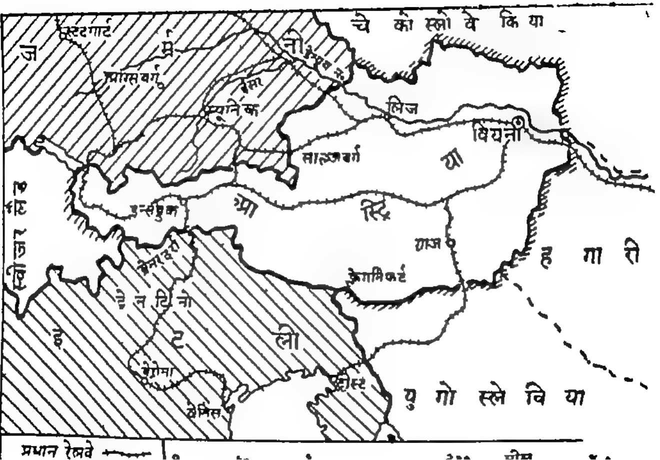
यूक्रेन प्रदेश में यूक्रेनियन (लघुरूसी) या रूथेनियन रहते हैं। इस प्रदेश की पेटी योरुपीय रूस के दक्षिणी भाग से आरम्भ होकर पूर्वी पोलैंड, पूर्वी चकोस्लोवेकिया और रूमानिया (बुकोविना और बसारेबिया) को छूती है। १६१८ में ब्रेस्टलिटोवस्क की सन्धि के अनुसार रूस का यह प्रदेश स्वाधीन बना दिया गया था। रूसी क्रान्ति के बाद १६१६-२० में लाल सेना ने इस प्रदेश को फिर से जीत लिया। १६२३ में यूक्रेन का साम्यवादी सोवीट प्रजातंत्र रूस का भाग बन गया।

यह रूस का बड़ा ही महत्वपूर्ण भाग है। यहां की कर्नोज़म या काली मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। यहीं डानट्ज़ की कोयले की खानें क्रिवोई राग की लोहे की प्रसिद्ध खानें हैं। यहीं कीव और खारकोव के कारबारी नगर और काले सागर के तट पर बसे हुए ओडेसा, रोस्टाव, नोवोरोसिस्क के व्यापारिक बन्दरगाह हैं। यूक्रेन का राष्ट्रीय आन्दोलन इस समय पश्चिमी योरुप और अमरीका में निर्वासित लोगों तक ही सीमित है।


जर्मनी
प्रेग
चेकोस्लोवेकिया
म्यूनिक
वियना
आस्ट्रिया
बुडापेस्ट
हंगरी
रोमानिया
बेलग्रेड
सराजेवो
एड्रियाटिक सागर
वह प्रदेश जो में
ऑस्ट्रिया हंगारी से छिन गया
मील

९—युद्ध में आस्ट्रिया-हंगारी की हानि

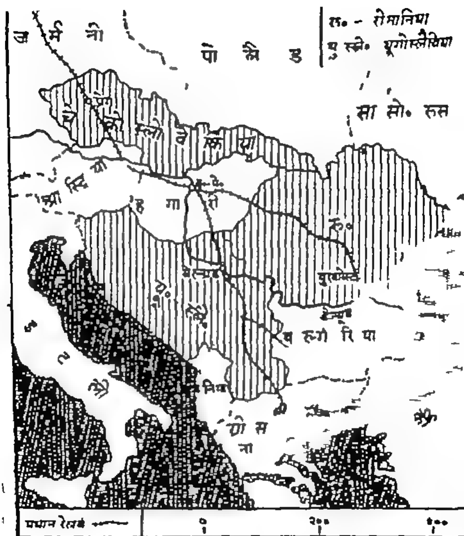
१९१९ में बड़ी लड़ाई के बाद जब आस्ट्रिया हङ्गरी का पुराना राज्य तोड़ दिया गया तब पुराने राज्य की लगभग सवा पाँच करोड़ आबादी सात राज्यों में बट गई। नवीन आस्ट्रिया में केवल ६५ लाख और हङ्गरी में ८० लाख आबादी रह गई। कार्पेथियन पर्वत के उत्तर वाला गलिशिया प्रान्त पोलैंड को मिल गया। बोहेमिया, मोराविया और उत्तरी हङ्गरी के मिलने से चेकोस्लोवाकिया का नया राष्ट्र बन गया। पूर्वी हङ्गरी और ट्रान्सिल्वेनिया का प्रान्त रूमानिया के हाथ लगा। दक्षिणी टायरोल और इस्ट्रिया प्रायद्वीप को इटली ने ले लिया। क्रोशिया, डलमेशिया, बोसनिया, हर्जेगोविना के प्रदेश सर्बिया में मिला दिये गये। इनसे यूगोस्लैविया नाम से सर्ब, क्रोट और स्लोवीन लोगों का नया राज्य बना। इस काट-छाँट से आस्ट्रिया और हङ्गरी के छोटे छोटे राज्य समुद्र से दूर योरप के भीतरी भाग में पड़ गये। जो डेन्यूब नदी अपने ऊपरी भाग में पुराने बड़े राज्य में ७०० मील का लम्बा जल मार्ग बनाती थी वह अब उसी भाग में चार स्वतन्त्र राज्यों में होकर बहती है। हाल में आस्ट्रिया को जर्मनी ने मिला लिया।


चे को स्लो वे कि या
स्टटगार्ट
म्यूनिक
लिंज
वियना
साल्जबर्ग
आ स्ट्रि या
इन्सब्रुक
ग्राज
हं गा री
स्विज़रलैंड
ट्रेन्टिनो
ली
ट्रीस्ट
यु गो स्ले वि या
वेनिस
प्रधान रेलवे

१०—आस्ट्रिया

नवीन आस्ट्रिया की राजधानी विएना में २० लाख और शेष के पहाड़ी भाग में ४५ लाख मनुष्य रहते हैं। शहर के लोग यवादी विचार के हैं। देहात के किसान लोग परम्परा प्रेमी सामन लिक हैं। वैसे देश में प्राय १० फी सदी लोग जमन भाषा भाषी और जाति, भाषा और संस्कृति में अपन उत्तरी पड़ोसी जमन लोगों के अंग हैं। बड़ी लड़ाई की काट-छांट से आस्ट्रिया की आर्थिक बड़ी शोचनीय हो गई। पिछले १५ वर्षों में आस्ट्रिया को [illegible]लिया होने से बचाने के लिये राष्ट्र संघ (लीग) और दूसरी [illegible]ष्ट्रों को आस्ट्रिया की सहायता करनी पड़ी।

दक्षिण में फेसिस्ट इटली और उत्तर में नाज़ी जर्मनी के बीच में [illegible]ट्रिया की भौगोलिक स्थिति खतरे से खाली नहीं थी। पहले [illegible]ट, फ्रांस और इटली देश आस्ट्रिया की स्वाधीनता कायम रखने के वचनबद्ध थे। लेकिन गत वर्ष जर्मनी ने फौजी प्रदर्शन करके बिना [illegible]मया किये ही आस्ट्रिया को जर्मनी में मिला लिया। इस समय [illegible]ट्रिया जर्मनी का ही अंग है। स्वाधीन आस्ट्रिया यूरोप के नक्शे से [illegible]मक उड़ गया।



र० – रोमानिया
यु० स्लो० यूगोस्लाविया
ज र्म नी
पो लै ण्ड
सा० सो० रूस
चे को स्लो वे कि या
आ स्ट्रि या
ह ंगा री
र०
बुखारेस्ट
ब ल्गा रि या
प्रधान रेलवे

१९—लिटिल एएटेएट (लघु मित्रराष्ट्र)

आस्ट्रिया-हंगारी के पुराने राज्य की काट-छांट से चेकोस्लोवेकिया नया राज्य बन गया और यूगोस्लेविया, पोलैंड और रूमानिया के य बढ़ गये। इन में चेकोस्लोवेकिया, यूगोस्लेविया और रूमानिया ने २३ में आपस में एक ऐसी सन्धि कर ली कि तीनों (सब) की शी नीति एक रहे। विदेशी मामलों को तय करने के लिए तीनों ों ने तीन मन्त्रियों की एक समिति नियुक्त की। एक आर्थिक समिति बनाई गई। यह तीनों देशों में रेलवे लाइनों को मिलाने और पुरी एकता रखने का प्रयत्न करेगी। तीनों देश उस सन्धि का दुहराने के में नहीं हैं जो बड़ी लड़ाई के बाद हुई। वे आस्ट्रिया के हैप्सबर्ग राज- को फिर से (हंगारी की) गद्दी पर बैठाने के कट्टर विरोधी हैं। से जर्मनी ने आस्ट्रिया को मिला लिया तब से यह छोटे-छोटे राज्य न नाज़ियों से घबराने लगे हैं। उन्हें अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता भारी संकट दिखाई देता है। तीनों डन्यूब नदी के देश हैं। पर डन्यूब मार्ग के सम्बन्ध में डन्यूब नदी की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है ामिया और यूगोस्लेविया के प्रधान अंग और रेल-मार्ग हंगारी में र ही चेकोस्लोवेकिया को जाते हैं।

चे को स्लो वे कि या

चेकोस्लोवेकिया में

हंगरी

बुडापेस्ट

ट्रान्सिल्वेनिया

रोमानिया

बानात

बेल्ग्रेड

स्लैविया

बुखारेस्ट

द्रावा नदी

सावा नदी

मारोस न

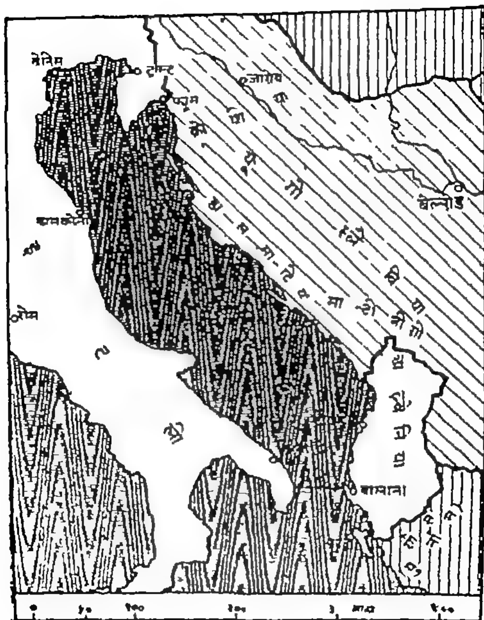
१९१८ के पहले रोमानियों और हंगरी की सीमा

जो प्रदेश १९१८ में रोमानियों और यूगोस्लेविया में मिल गया

० 100 200 300 मील

१२—हंगारी

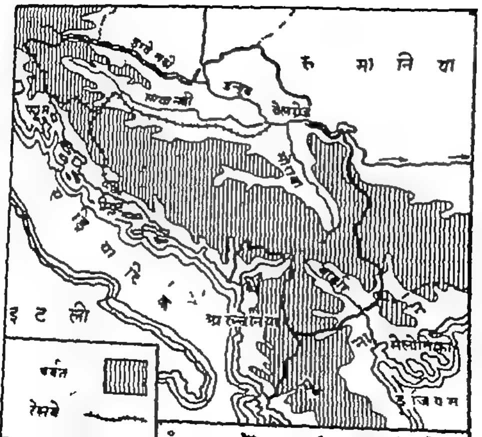
नवीन हंगारी एक राज्य है। लेकिन यहां कोई राजा नहीं है। ञ सिंहासन खाली है। एडमिरल होर्थी नाम मात्र के लिये युवराज र काम करते हैं। इस प्रकार हंगारी के लोग प्रगट रूप से १९१९ ी सन्धि से नाराजगी जाहिर कर रहे हैं। यहाँ की सरकार ने बड़ी लड़ाई ी सन्धि की शर्तों की बार बार निन्दा की। समय आने पर वह न का भी प्रयास करेगी। इस सन्धि से लगभग एक तिहाई मेगायर मग्यार) हंगारी देश के बाहर रूमानिया (ट्रान्सिल्वेनिया) चेकोस्लो कोस्लोवेकिया और युगोस्लेविया (बानात) में बस दिये गये हैं। गारी के नेता हंगारी देश की सीमा को इस प्रकार बढ़ाना चाहते हैं क यह छूटे हुए मग्यार लोग फिर से हंगारी देश में आजावें। वे ान्सिल्वेनिया में स्वाधीन राज्य चाहते हैं। वे यह भी चाहते हैं कि ुगोस्लेविया के क्रोट, बर्गेनलैंड के आस्ट्रियन और पूर्वी चेकोस्लोवेकिया के रूथेनियन लोगों का राजनैतिक भाग्य उनके ही बहुमत से निर्धारित किया जाये।



१३—इटली, यूगोस्लेविया और एड्रियाटिक

इटली देश एड्रियाटिक सागर को अपने अधिकार में रखना चाहता है। यूगोस्लेविया अपने से मिले हुए डलमेशियन तट को सुधारना चाहता है। इसी से इटली और यूगोस्लेविया का विरोध है। १९१९ की सन्धि से इटली को आस्ट्रिया का ट्रीस्ट बन्दरगाह मिल गया। फ्यूम बन्दरगाह को उसने जबरदस्ती छीन लिया। १९२० की रपालो की सन्धि में इटली को ज़ारा बन्दरगाह और लागोस्टा द्वीप मिल गया।

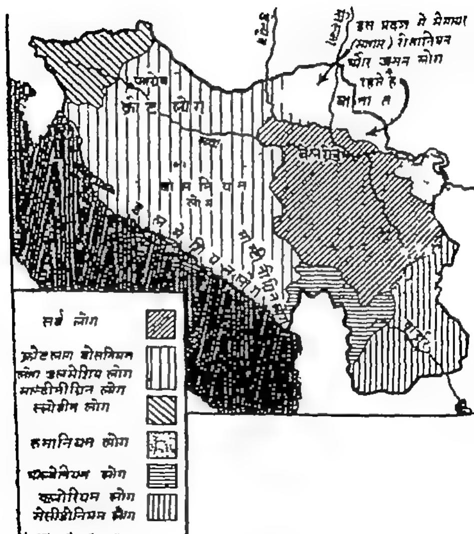
१९१३ में बालकन युद्ध के बाद अल्बानिया का स्वतन्त्र राज्य इसी लिए बनाया गया कि सर्विया समुद्र-तट तक न पहुँच सके। अल्बेनिया एक प्रकार से इटली की ही संरक्षता में है। १९२६ में तिराना की सन्धि के अनुसार इटली को अल्बानिया में हस्तक्षेप करने का अधिकार मिल गया। इटली के दक्षिणी-पूर्वी सिरे के ठीक सामने वालोना का बन्दरगाह सैनिक दृष्टि से इटली के बड़े काम का है। अल्बेनिया के आर्थिक सुधार की सभा का नियन्त्रण इटली के बैंक किया करते हैं। सैनिक सड़कें यूगोस्लेविया की सीमा तक बन चुकी हैं। एड्रियाटिक सागर में इटली और अल्बानिया का ठीक वही सम्बन्ध है जो कैरिबियन सागर में संयुक्तराष्ट्र अमरीका और क्यूबा का है। हाल में इटली और यूगोस्लेविया का सम्बन्ध कुछ सुधर गया है।


रु मा नि या
इ ट ली
मोरावा
सेलोनिका
पर्वत
रेलवे

१४—लिटिल एएटेएट

१ यूगोस्लैविया

यूगोस्लैविया के नये राज्य के बन जाने से सर्बिया का पुराना स्वप्न पूरा हो गया। सर्बिया की बड़ी इच्छा थी कि वह एड्रियाटिक सागर तक पहुँच सके। लेकिन इससे यूगोस्लैविया की कठिनाइयाँ दूर नहीं हुई हैं। यूगोस्लैविया का पश्चिमी भाग पहाड़ी है। इसलिये इस पार समुद्र तक पहुँचने में बड़ी बाधा है। देश को पार करके समुद्र-तट तक केवल दो प्रधान रेलवे लाइनें पहुँचती हैं। उत्तरी शाखा का अन्तिम स्टेशन फ्यूम है जो इटली के अधिकार में है। यूगोस्लैव लोगों को फ्यूम का बाहरी मुहल्ला सूसक मिला है। दक्षिणी रेलवे शाखा स्प्लिट (स्पालाटो) में पहुँचती है। देश की प्रधान नदी डन्यूब और इसकी सहायक द्रावे और मोरावा नदियाँ एड्रियाटिक सागर से दूर पूर्व की ओर बहती हैं। ड्रीन घाटी दक्षिणी और मध्य भाग को पार करके अलबानिया में होकर बहती है। इटली के विरोध से यह मार्ग बन्द सा ही है। वार्दार घाटी दक्षिण की ओर इजियन सागर के लिये मार्ग बनाती है। इधर यूनानी लोगों का (सेलोनिका पर अधिकार होने से) घोर विरोध होता है।



सर्ब लोग
स्लोवीन लोग
रूमानियन लोग

१५—यूगोस्लैविया की जातियाँ

यूगोस्लैविया सर्ब, क्रोट और स्लावोन लोगों का राज्य है। पुरानी सर्बिया के बहुत कुछ बढ़ जाने से यह राज्य बना है। १९१२-१३ के बाल्कन युद्ध के बाद सर्बिया का प्रदेश दक्षिण में वार्डर घाटी की ओर काफी बढ़ गया। १९१४ में बड़ी लड़ाई के बाद आस्ट्रिया हंगरी के स्लोवानिक प्रान्त (क्रोशिया, स्लैवानिया, बासनिया, हार्जी गाविना और और मान्टीनीग्रो का छोटा राज्य सर्बिया में मिला दिया गया। इन सब के मिलने से यूगोस्लैविया का राज्य बना है। सर्ब लोग इन नये प्रान्तों को अपने अधिकार में समझने लगे हैं। सर्ब लोगों से अधिक सभ्य और कारबारी क्रोट लोग इसका विरोध करते हैं और अपने लिये स्वाधीनता चाहते हैं। क्रोट लोग कैथोलिक हैं। सर्ब लोग आर्थोडक्स धर्म के ईसाई हैं।

देश के भीतरी विग्रह को सुलझाने के लिये सर्बिया के राजा एलेग्ज़ैंडर ने नये ढंग की लोकसत्ता स्थापित की। इसके अनुसार देश में एक ही राष्ट्रीय दल को स्थान दिया गया। वह स्वयं डिक्टेटर या तानाशाह बन गया। लेकिन उसकी हत्या कर डाली गई। राजा के मारे जाने के बाद देश के सामने नई समस्या उपस्थित हुई। युवराज की सभा सर्बिया की एकता भी रखना चाहती है। इसके साथ ही क्रोशियन लोगों की माँगों का पूरा करना भी जरूरी है।


चकोस्लोवेकिया में जर्मन लोग

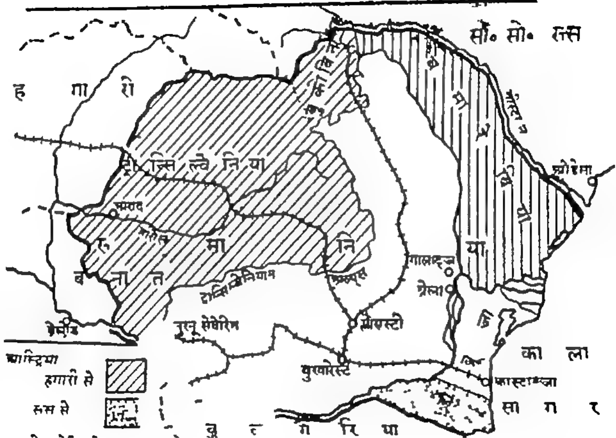
माजार (मेगायर लोग)

रुथेनियन लोग

कोयले की प्रधान खानें
बोहेमिया
मोरेविया
स्लोवेकिया
पू॰ स्लोवेकिया
आस्ट्रिया
विएना
बुडापेस्ट

१६—लिटिल एएटेएट चेकोस्लोवेकिया

लिटिल एएटेएट के तीन देशों में चेकोस्लोवेकिया सबसे अधिक
त्यारी है। स्वाधीनता के भाव भी यहाँ के लोगों में अधिक हैं। बड़ी
ाई के बाद आस्ट्रिया-हंगारी के राज्य के बड़े भाग के अलग हो
ने से प्रायः चेकोस्लोवेकिया देश बना है। केवल उत्तर में जर्मनी से
र साइलेशिया का छोटा हिस्सा अलग करके चेकोस्लोवेकिया में
ामाया गया है। इसी से बोहेमिया का भला बसा हुआ प्रान्त शामिल
। चेकोस्लोवेकिया में लगभग ७० फ़ीसदी लोग चेक और स्लोवैक,
फ़ीसदी जर्मन हैं। १९३९ के चुनाव में यहां के नाजीदल को अपूर्व
ळता मिली है। दस फ़ी सदी मेगायर और रूथेनियन हैं। रूथेनियन
न्त चेकोस्लोवेकिया के एकदम सिरे पर स्थित है। इसमें न चेक
स्लोवैक लोग रहते हैं। इसमें पुरानी हंगारी के प्रायः बड़े बड़े
गीरदार मेगायर लोग रहते हैं। इस प्रान्त को केवल रूमानिया से
ट मार्ग सम्बन्धी सम्बन्ध स्थापित करने के लिये हंगारी से छीन
मिलाया गया था। इससे मेगायर जनता और चेकोस्लावैक सरकार में
ी अनबन रहती है। मेगायर किसानों का रहन सहन भी देश के
क कारबारी लोगों से एकदम भिन्न है।

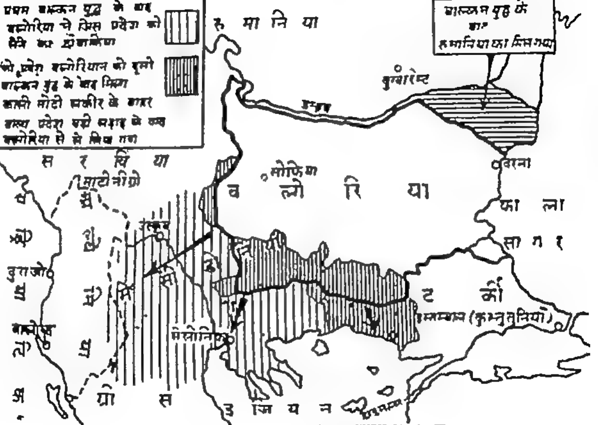

सो॰ सो॰ रूस
ह गा री
ट्रांसिल्वेनिया
रू मा नि या
ब ना त
बुखारेस्ट
प्लोएस्टी
काला सागर
बु ल्गा रि या
ओडेसा
हंगारी से
रूस से

१७–लिटिल एएटेएट रूमानिया

ग्झो लड़ाई के बाद रूमानिया देश पहले से दुगना से भी अधिक या है। इसी लिये रूमानिया बड़ी लड़ाई से सम्बन्ध रखने वाली ों का दुहरान (सुधारन) के लिय तैयार नहीं है। यह प्राय र देश है। कइ नय भागों के मिल जाने स रूमानिया में कई ों का अ नघट हो गया है। रूमानियन लागों क अतिरिक्त यहाँ ा ढाई लाख यूक्रेनियन, ढाई लाख जमन और यहूदी और इन मेगायर (माजार) दो लाख बल्गेरियन और दा लाख तुर्की और र रहते हैं।

ूक्रेनियन लोग बसारबिया प्रान्त में रहते हैं। इस प्रान्त को ेया ने क्रान्ति के समय १९१८ ई० में रूस से छीन लिया था। ना प्रान्त पहले आस्ट्रिया के सम्राट की सम्पत्ति थी। माजार लोग तर ट्रान्सिल्वनिया, और बानात में रहते हैं। डाबूजा प्रान्त का े भाग १९१३ ई० में दूसरे बाल्कन युद्ध के बाद रूमानिया न ेया स छीन लिया था। भाज़ी कारनामों म रूमानिया में फिर प्रश्न उठ खड़ा हुआ है।

रूमानिया का प्रधान निर्यात गेहूँ और मिट्टी का तेल है। मिट्टी के ं बरमे अधिकतर ट्रान्सिल्वानियन अप्रन्न के दक्षिणी ढालों पर जाते हैं।



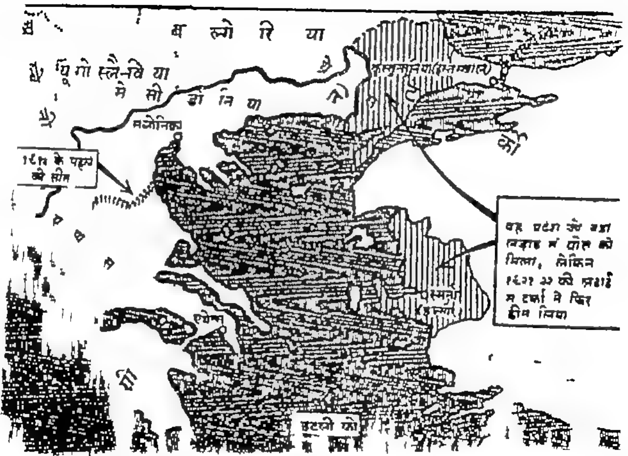
रूमानिया
बल्गेरिया
सोफिया
वारना
काला सागर
टर्की
सर्बिया
ग्रीस
सेलोनिका

१८—बल्गेरिया

बल्गेरिया का अकसर बाल्कन प्रदेश का हंगारी कहते हैं। हंगारी की तरह बल्गेरिया भी १६१८ की सन्धि से असन्तुष्ट है। वह इसको शीघ्र बदलवाना चाहता है। इससे पहले १९१३ ई० की सन्धि भी उस और असन्तोष है। १९१२ में बल्गेरिया अपने सब पड़ोसियों से अधिक बलवान था। १९१३ ई० में जब उसने अपने पड़ोसियों में से मिलकर टर्की को हराया तो उसे कोई विशेष लाभ न हुआ। १९ में सर्विया ने मैसीडोनिया और ग्रीस (यूनान) ने सेलोनिका लिया। रूमानिया ने उत्तर की ओर दक्षिणी डोबरूजा प्रदेश ले लिया। गेरिया को ईजियन सागर के किनारे का कुछ भाग मिला। वह १९१८ में उस से छीन लिया गया।

यूगोस्लाविया से स्थायी शत्रुता रखना ही बल्गेरिया की विदेशी नीति मालूम होती है। लेकिन लोग सोचते हैं (नाज़ी) जर्मनी के दर से शायद दोनों देशों में कुछ मित्र भाव हो जाय।

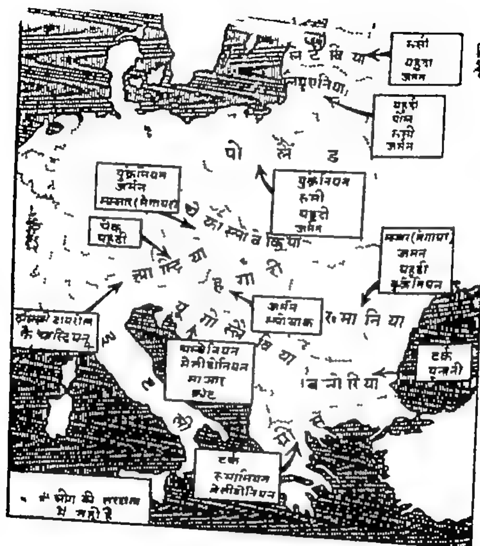
रूमानिया की तरह बल्गेरिया के लोग भी अधिकतर किसान हैं। व अपनी सरकार से बहुत ही असन्तुष्ट हैं। उनको दबाने के लिये तरह-तरह के कानून बने। हाल में फौजी अफसरों और राजा के बीच में जो दांव पेंच चले उससे स्पष्ट है कि नया शासन-प्रकार अधिक सन्तोष जनक हो।



यूगोस्लैविया

१६—ग्रीस (यूनान)

ग्रीस देश में अधिक तर ईजियन सागर का तट और कुछ द्वीप
शामिल हैं। १९१२-१३ के बाल्कन युद्ध के बाद ग्रीस को कुछ उत्तरी
ट और सेलोनिका मिल गया। बड़ी लड़ाई के बाद मित्र राष्ट्रों
टर्की से पूर्वी थ्रेस छीन कर स्मर्ना (कुस्तुन्तुनिया के पास तक)
और कई द्वीप देकर ग्रीस की सीमा को बहुत कुछ बढ़ा दिया। लेकिन
१९२१-२२ में टर्की से बुरी तरह हारने के बाद स्मर्ना और पूर्वी थ्रेस
चला गया। हाल में ग्रीस और टर्की में मित्रता हो गई। लीग (राष्ट्र-
संघ) की आर्थिक सहायता से ग्रीस में बसे हुए टर्क टर्की में पहुँचा
दिये गये और टर्की में बसे हुए यूनानी ग्रीस भेज दिये गये। १९३३
में ग्रीस और टर्की में मित्रता सम्बन्धी सन्धि हो गई। इस से दोनों
न आपस की सीमा को सुरक्षित रखने और अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर एक
मत रखने का निश्चय कर लिया। तब से इटली ने डोडकनीज़
द्वीप समूह और रहोड द्वीप पर अधिकार कर लिया और वहाँ अपना
फौजी अड्डा बनाया है तब से ग्रीस की राष्ट्रीय भावनायें कुछ विक्षुब्ध
सी हो गई हैं। साइप्रस द्वीप पर लगातार ब्रिटिश अधिकार भी यूनानी
राष्ट्रीय सम्मान को धक्का पहुँचाता है।


पोलैंड
यूक्रेनियन
रूसी
यहूदी
जर्मन
चेकोस्लोवेकिया
हंगरी
रूमानिया
बल्गेरिया
तुर्क
यूनानी

२०—पूर्वी और मध्य योरुप में अल्प-संख्यक जातियां

बड़ी लड़ाई और उसके बाद होने वाली सन्धि के अनुसार पूर्वी
र मध्य योरप में जो जातियाँ अल्प संख्या में थीं प्रायः उन सब ने अलग
लग राष्ट्र बना लिये। इनके यहां जो अल्प संख्या में लोग बचे उनके
र्यों की रक्षा का भार लीग (राष्ट्र संघ) ने अपने ऊपर ले लिया।
ड, चेकोस्लोवेकिया, यूगोस्लेविया, रूमानिया और ग्रीस की सीमायें
ल से काफी अधिक बढ़ गईं। अल्प संख्या के लोग लीग की कौंसिल
सामने शिकायतें पेश कर सकते हैं। लेकिन लीग की प्रथा ऐसी
ी है कि इसमें बहुत कुछ देरी होने का डर रहता है। लीग ने अब
किसी अल्प संख्या का पक्ष लेकर किसी राष्ट्र के शासन प्रबन्ध में
क्षेप नहीं किया है। पोलिश यूक्रेन ने अपना स्वराज्य स्थापित करने
लिये लीग को कई बार अर्जी दी। लेकिन कोई फल न हुआ। यूक्रेनियन
पोलैंड और रूमानिया के रुथेनियन भी शामिल हैं।

पो लै ड

रोमानिया

रूसी
यहूदी
जर्मन

चेक
यहूदी

जर्मन

तुर्क
यूनानी

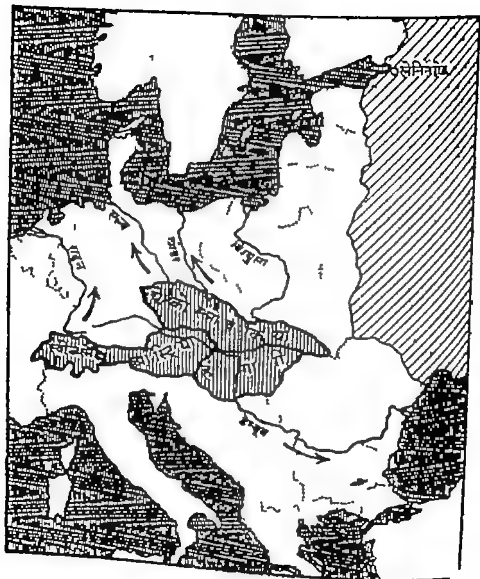
२०—पूर्वी और मध्य योरुप में अल्प-संख्यक जातियां

पहली लड़ाई और उसके बाद होने वाली सन्धि के अनुसार पूर्वी और मध्य योरुप में जो जातियाँ अल्प संख्या में थीं प्रायः उन सब ने अलग अलग राष्ट्र बना लिये। इनके यहाँ जो अल्प संख्या में लोग बच गये उनके स्वत्वों की रक्षा का भार लीग (राष्ट्र संघ) ने अपने ऊपर ले लिया। पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, युगोस्लेविया, रूमानिया और ग्रीस की सीमायें पहले से काफी अधिक बढ़ गईं। अल्प संख्या के लोग लीग की कौंसिल के सामने शिकायत पेश कर सकते हैं। लेकिन लीग की प्रथा ऐसी ढीली है कि इसमें बहुत कुछ देरी होने का डर रहता है। लीग ने अब तक किसी अल्प संख्या का पक्ष लेकर किसी राष्ट्र के शासन प्रबन्ध में हस्तक्षेप नहीं किया है। पोलिश यूक्रेन ने अपना स्वराज्य स्थापित करने के लिये लीग को कई बार अर्जी दी। लेकिन कोई फल न हुआ। यूक्रेनियन में पोलैंड और रूमानिया के रुथेनियन भी शामिल हैं।


फि न लै ड
एस्टोनिया
रीगा
लेटविया
पों लैं ड

२१—योरुप के नये राष्ट्र

बड़ी लड़ाई के बाद योरुप की राजनैतिक सीमाओं में भारी परिवर्तन हो गया। १९१९ में छः नये और स्वाधीन राष्ट्र बन गये। इन नये राष्ट्रों के बनाने में ऊपर से राष्ट्रीयता के सिद्धान्त का पालन दिखलाया गया। ऐसा करना मित्र राष्ट्रों के लिये सुविधा जनक था। नये छः राष्ट्रों में चार राष्ट्र एकदम रूस के प्रदेश को अलग कर के बनाये गये। पाँचवें राष्ट्र अर्थात् पोलैंड को फिर से बनाने में भी रूस का बहुत बड़ा भाग अलग किया गया। चकोस्लावेकिया नाम पुराने आस्ट्रिया-हंगारी के साम्राज्य के छिन्न भिन्न होने से बना है। प्रथम पाँच राष्ट्रों का समुद्र तक पहुँचना सुगम है। पोलैंड को समुद्र तक पहुँचने के लिये मार्ग देने के लिये जर्मन के प्रदेश को दो भागों में बाँट कर पालिश कारीडर बनाया गया। डैंजिग बन्दरगाह में जर्मनों की अधिकता और बहिष्कार से बचने के लिये पोलैंड की सरकार ने गिडीनिया नाम का एक नया बन्दरगाह बनाया। चकोस्लावेकिया चारों ओर से स्थल से घिरा हुआ है। विदेशी समुद्र-तटों तक पहुँचने के लिये इसे नदियों की सहायता लेनी पड़ती है।



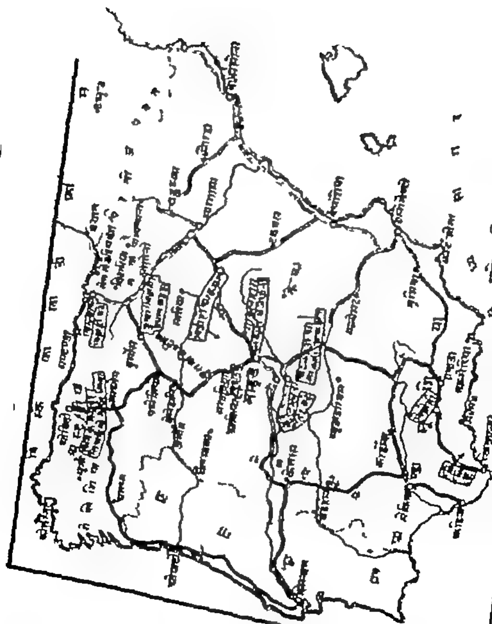
२२—योरुप के भीतरी राज्य

बड़ी लड़ाई के पहले योरुप में स्विजरलैंड और सर्विया ही दो ऐसे भीतरी देश थे जो किसी समुद्र को नहीं छूते थे। बड़ी लड़ाई के बाद आस्ट्रिया हंगरी और चेकोस्लोवेकिया तीन और देश भीतर डाल दिये गये। ये किसी समुद्र को नहीं छूते हैं। रूस का समुद्र तट भी बहुत कम हो गया। फिनलैंड की खाड़ी के पास वाले तट को छोड़कर शेष तट रूस के हाथ से जाता रहा।

हर किसी राज्य के लिये जलमार्गों का होना आवश्यक है। कुछ नदियों को अन्तर्राष्ट्रीय महत्व मिलगया। राइन एल्ब और ओडर इनमें प्रधान हैं। यह तीनों जर्मनी की प्रधान रूप से जर्मनी की नदियां हैं। डेन्यूब नदी जर्मनी के दक्षिण में निकलती है। लेकिन यह जर्मनी के दक्षिण वाले देशों के लिये जल-मार्ग बनाती है। इन सब नदियों पर कुछ न कुछ अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण है। इस प्रकार स्विजरलैंड को राइन में चेकोस्लोवकिया को एल्ब और ओडर में अपने स्टीमर चलाने का अधिकार मिल गया है। इससे चेकोस्लोवकिया के बाहरी व्यापार का प्रधान बन्दरगाह हेम्बर्ग है जो जर्मनी में एल्ब के मुहाने के पास स्थित है। डेन्यूब नदी का नियन्त्रण एक कमीशन के हाथ में है। इस कमीशन के सदस्य चार हैं। इनमें बाल्कन प्रदेश के केवल रूमानिया देश का प्रतिनिधि इसमें शामिल है। शेष तीन ब्रिटेन, फ्रांस, और इटली के हैं। बाल्कन प्रदेश के नहीं हैं। इस तरह बाहर की बड़ी शक्तियों को बाल्कन प्रदेश के झगड़ों में हस्तक्षेप करने का मौक़ा मिलता रहता है।

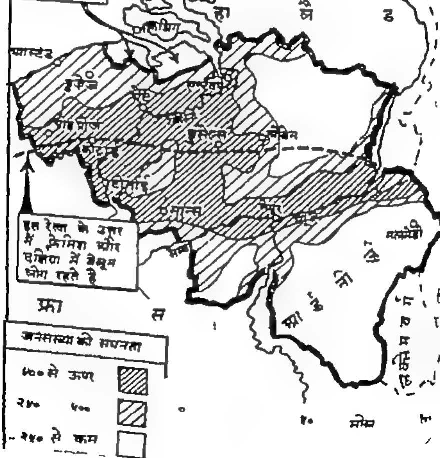

गाल्वे
लिमेरिक
डब्लिन
मील





२४–स्पेन का विच्छेद

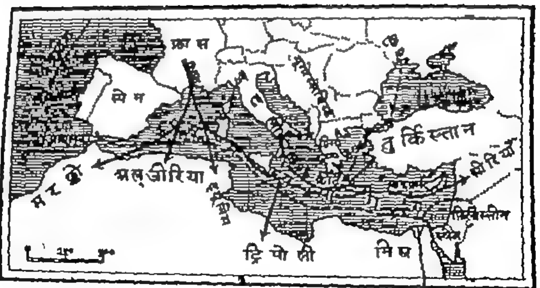
आइबेरिया प्रायद्वीप का सब से बड़ा भाग स्पेन है। स्पेन में नदियों पाटिय और पठारों के बीच में पहाड़ खड़े हुये हैं और देश की एकता प्राकृतिक बाधा डालते हैं। राजा के चले जाने के बाद देश में जो तन्त्र राज्य स्थापित हुआ उसे प्रबल होने का पूरा अवसर न मिल ।। उत्तर में बास्क और पूर्व की ओर भूमध्य सागर के पास रहने कटेलन लोग स्वाधीन होने का प्रयत्न करने लगे। नया प्रजातन्त्र साधारण और किसानों के आर्थिक कष्टों को कुछ भी दूर नहीं कर पा कि इतने में बड़े बड़े जागीरदारों, पादरियों और सेनापतियों ने कर जनरल फ्रांको की अध्यक्षता में विद्रोह का झंडा उठाया। मराक्को यत स्पेन के मूर सिपाही विद्रोहियों का साथ देने के लिये बुलाये । विद्रोहियों को छिपे छिपे इटली जर्मनी, और पुर्तगाल से मदद मिल है। स्पेन की सरकार को रूस और फ्रान्स से सहायता मिलती है। से स्पेन की गृह-कलह अन्तर्राष्ट्रीय लड़ाई का रूप धारण करती ती है।


जनसंख्या की सघनता
५०० से ऊपर
२५० ५००
२५० से कम

२५—बेल्जियम की जातियां

बेल्जियम के दक्षिणी भाग में रहने वाले वालून लोग फ्रेंच भाषा [illegible] हैं। उत्तरी भाग में रहने वाले फ्लेमिंग लोग डच लोगों से [illegible]ती जुलती या जर्मन भाषा बोलते हैं। भाषा की लड़ाई एक बार [illegible] गयी कि पहली लड़ाई के समय में फ्लेमिश नेताओं ने जर्मनी की [illegible]ाया में एक अलग स्वाधीन राज्य स्थापित करने की कोशिश की। लड़ाई के बाद वालून लोगों ने फ्लेमिश लोगों की इन हरकतों को [illegible]ही ठहराया और कुछ लोगों को दंड देने का निश्चय किया गया। [illegible] बड़ा कोलाहल मचा। लेकिन फ्लेमिश लोगों की भाषा को राज्य [illegible] में स्थान मिल गया और घन्ट विश्वविद्यालय में फ्लेमिश भाषा [illegible]ानता हो गई।

[illegible]स्ट नदी के बायें किनारे के सम्बन्ध में हालैंड और बेल्जियम के [illegible]ं झगड़ा चल रहा है। इस समय स्केल्ट नदी के दोनों किनारे डच [illegible]के अधिकार में है। एण्टवर्प बन्दरगाह को सुरक्षित रखने के लिये [illegible]न लोग बायें किनारे पर अपना अधिकार चाहते हैं।



तुर्किस्तान
अल्जीरिया
ट्रिपोली
मिस्र

६—भूमध्यसागर में जातियों का संघर्ष

प्राचीन रोमन काल में भूमध्यसागर पहले पहल प्रसिद्ध हो गया। योरपीय शक्तियाँ अफ्रीका में घुसने लगीं तब भूमध्यसागर का त्व और भी अधिक बढ़ गया। स्वेज़ नहर के खुल जाने से भूमध्य गर पहले से अधिक महत्वपूर्ण बन गया। यहाँ कई जातियों के र्थों का संघर्ष होता है। फ्रांस के लिये फ्रांस से उत्तरी अफ्रीका को ने वाले मार्ग बड़े काम के हैं। इटली भूमध्यसागर को एक रोमन ल समझता है। इटली से ट्रिपली और लालसागर पर बसे हुए लियन उपनिवेशों और एबीसीनिया को मार्ग गये हैं। एड्रियाटिक गर पर इटली का प्रायः निरंकुश अधिकार है। पश्चिम से पूर्व भारतवर्ष) को जाने वाला समुद्री मार्ग ब्रिटेन के लिये जीवन मरण प्रश्न रखता है। जिब्राल्टर, माल्टा, साइप्रस और स्वेज़ इस जल र की कुंजी हैं। ग्रीस (यूनान) को यह सह्य नहीं है कि रोडद्वीप और डोडेकेनीज़ द्वीपों पर इटली का अधिकार जमा रहे। रूस के दक्षिणी तट जलभाग बास्फोरस और डार्डेनेल्स जलसंयोजकों में होकर पूर्वी मध्यसागर में पहुँचता है। इसलिये रूस चाहता है कि भूमध्यसागर किसी एक जाति का विशेष रूप से प्रभुत्व न होने पावे।


मदीना
मक्का
इब्न सऊद
सू डा न
मील

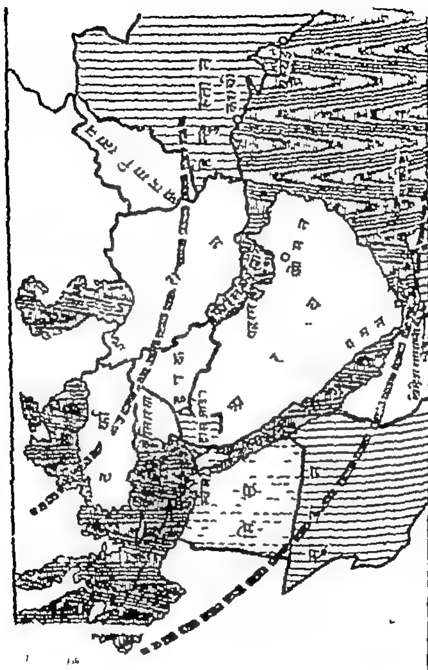
७—पिछली लड़ाइयों में टर्की का ह्रास

ाएक्न युद्ध के बाद यं रूमीय जातियों के ऊपर से टर्की का राज्य
रहा। बड़ी लड़ाई ने अरब, सिरिया पेलस्टाइन और इराक़ के
को भी तुर्की शासन से मुक्त कर दिया। मिस्र देश से तुर्की का
बड़ी लड़ाई के आरम्भ में ही जाता रहा था। इस समय टर्की में
ो प्रधानता है। केवल दजला और फरात नदियों के निकास के
र्द लोग कुछ अल्प संख्या में रहते हैं। बड़ी लड़ाई के बाद
। पर फ्रांस का मैंडेट होगया। पेलस्टायन, ट्रान्स जार्डन और इराक
देश मैंडेट हो गया। पीछे से इराक़ प्रायः स्वाधीन हो गया।
श में मित्रराष्ट्रों ने अपने अपने पिट्ठू कई सरदार और अमीर
र दिये। अधिक दक्षिण की ओर इब्नसऊद ने बद्दुओं को बीत
लेखा) किया।

ी लड़ाई के बाद बास्फ़ोरस और डार्डनेल्स के जलसयोजकों के
। किलेबन्दी हटा ली गई थी। लेकिन १९३६ में इस प्रदेश पर
फिर अपना पूरा अधिकार कर लिया।

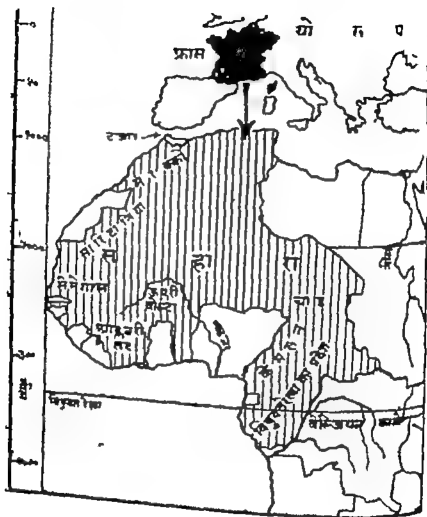
२८—टर्की

पो इस वर्ष में चार विकराल लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं।
२ में ट्रिपली में इटली से तथा १९१२ में बाल्कन युद्ध हुआ।
१४-१८ के योरपीय युद्ध में टर्की ने जर्मनी का साथ दिया।
२१-२२ में ग्रीस से टर्की को घोर युद्ध करना पड़ा। इसके बाद
ा कमाल पाशा की अध्यक्षता में टर्की का देश शान्ति की ओर
लगा। टर्की का राज्य योरप में कुस्तुन्तुनिया और उसके पड़ोस तक
सीमित रह गया। एशिया में अनातूलिया का विशाल पठार है।
लपाशा ने देश को उठाने के लिए रेल, सड़क और कारबार की ओर
का पूरा ज़ोर लगा दिया। अनातूलिया पठार के आर पार जाने
ी एक ऐसी रेल की योजना हो रही है जो काला सागर पर बसे हुए
सौम बन्दरगाह को भूमध्यसागर के मर्सीना बन्दरगाह से मिलायगी।
लाइन अंगोरा से रूमा सीमा तक जायगी। आजकल अंगोरा को
रा और कुस्तुन्तुनिया को इस्तम्बोल कहते हैं।
बड़ी लड़ाई के बाद रूस और टर्की में बड़ी मित्रता हो गई। हाल
र्की के पुराने दुश्मन ग्रीस से भी मित्रता हो गई है।



६—पश्चिमी एशिया में अंग्रेजी अंकुश

पूर्वी भूमध्यसागर को पूरब वाला का स्थल प्रदेश लाल सागर और
स की खाड़ी के बीच में स्थित है यह ब्रिटिश साम्राज्य के बड़े काम
है। यहीं होकर हिन्दुस्तान और हिन्दमहासागर के लिये छोटा समुद्री
रा है। यहीं होकर हिन्दुस्तान और आस्ट्रेलिया के लिये ब्रिटिश हवाई
ज़ जाते हैं। इसी मार्ग को काटने के लिये जर्मनी ने टर्की के पार
जाने वाली बर्लिन बगदाद रेलवे की योजना की थी। फारस की
ी से टर्की होकर योरुप जाने वाला स्थल मार्ग काफी लोकप्रिय हो
है। इस मार्ग पर इस समय विशेष रूप से ब्रिटेन का नियन्त्रण
इस मार्ग में बाधा न पड़े इसलिये मिस्र देश को पूरी आज़ादी नहीं
जा सकती। इसी से ब्रिटिश राजनीतिज्ञ इब्नसऊद का ट्रान्सजार्डन
बढ़ना सहन नहीं कर सकते। बड़ी लड़ाई ने इस प्रदेश पर से तुर्की
न को उठा दिया। लेकिन एबीसीनिया को विजय और योमेन (यमन)
टली की चालों से यह मार्ग संकट में पड़ता जा रहा है।


फ्रांस
सेनेगाल
चाड

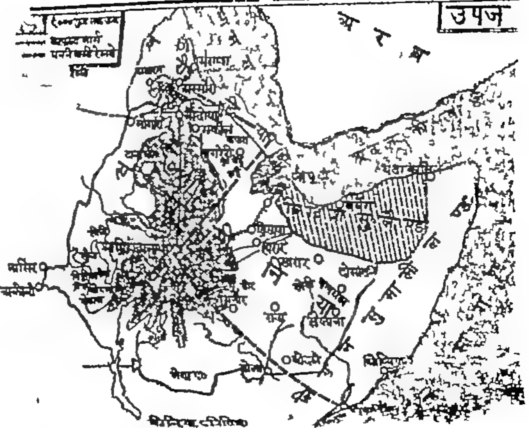
३०—फ्रान्स और पश्चिमी भूमध्यसागर

जब से सिरिया के ऊपर फ्रांस का मैंडेट (शासन) हुआ है तब पूर्वी भूमध्य सागर भी फ्रांस के काम का हो गया है। लेकिन फ्रांस : प्रधान साम्राज्य पश्चिमी भूमध्य सागर के उत्तरी किनारे से रम्भ होता है। थाके से स्पैनिश थान (पट्टी) और ज़ंरा से अन्तर्राष्ट्रीय रीर को छोड़ कर सारा उत्तरी अफ्रीका (एटलस प्रदेश) फ्रांस के धिकार में है। विषुवत रेखा के पास भूत पूर्व जर्मन उपनिवेशों पर ।सीसी अधिकार हो जाने से फ्रांस का साम्राज्य भूमध्य सागर के वेणी तट से १००० मील दक्षिण की ओर बढ़ गया है। यहाँ से ।स को शान्ति के समय कच्चा माल और लड़ाई के समय असंख्य ।पाही मिलते हैं। वैसे तो फ्रांस का राज्य अफ्रीका के पूर्व में मेडेगास्कर ।र एशिया के फ्रेंच इण्डोचीन पर भी है। लेकिन फ्रांस को सब से ।ा लाभ उत्तरी-पश्चिमी अफ्रीका से होता है। इसी से फ्रांस ।श्चमी भूमध्य सागर के जल-मार्ग को अपने हाथ में रखने के लिये ।ा हुआ है।



३१ इटली और लाल सागर

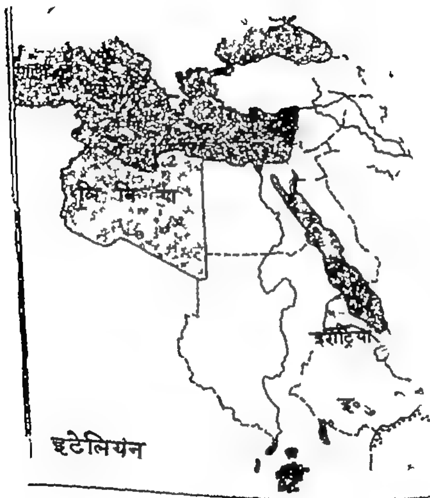
साम्राज्यवाद की दौड़ में इटली कुछ पिछड़ गया। अफ्रीका के
अच्छे प्रदेश दूसरी जातियों ने घेर लिए। मिस्र देश के पास
हुआ लिबिया का प्रायः रेगिस्तानी प्रदेश १९१२ में इटली ने
से छीन लिया। लाल सागर के किनारे इरीट्रिया और इटालियन
ली लैंड पर उसने पहले ही अधिकार कर लिया था। फिर उसने
की खाड़ी के पास वाले अरब प्रदेश पर अधिकार जमाया।
में १९३५ में इटली ने एबीसीनिया पर धावा बोलकर अस्त्र
हवाई जहाज़ों के ज़ोर से वहाँ ९ महीने के भीतर अधिकार कर
। इस समय एबीसीनिया पर इटली का फौजी अधिकार है।
से इटली का राजा एबीसीनिया का सम्राट कहलाता है।


उपज

३१ इटली और लाल सागर

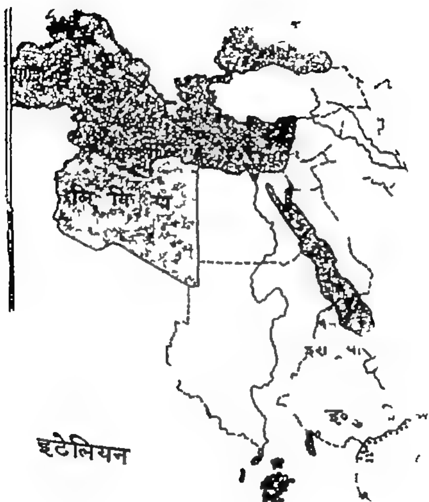
साम्राज्यवाद की दौड़ में इटली कुछ पिछड़ गया। अफ्रीका के अच्छे प्रदेश दूसरी जातियों ने घेर लिये। मिस्र देश के पास तुर्की लिबिया का भाग रेगिस्तानी प्रदेश १९१० में इटली ने छीन लिया। लाल सागर के किनारे इरीट्रिया और इटालियन लैंड पर उसने पहले ही अधिकार कर लिया था। फिर उसने ी खाड़ी के पास वाले अरब प्रदेश पर अधिकार जमाया। १९३५ में इटली ने एबीसीनिया पर धावा बोलकर [illegible] ाई जहाज़ों के द्वारा से वहाँ ९ महीने के भीतर अधिकार कर

इस समय एबीसीनिया पर इटली का फौजी अधिकार है। इटली का राजा एबीसीनिया का सम्राट कहलाता है।


इरीट्रिया
इटेलियन

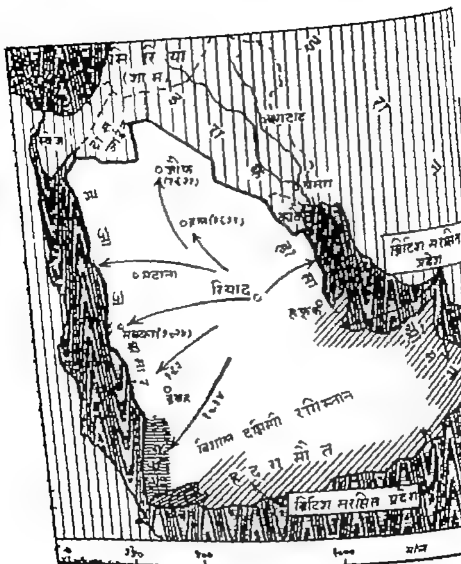
३२—एबीसीनिया

मय से ५० वर्ष पहले से ही इटली की आँख एबीसीनिया लगी थी। इटली ने पहले मसावा लिया और इरीट्रिया उप-शा की नींव डाली। फिर इटली ने (इटेलियन) सुमालीलैंड अधिकार घोषित किया। दस वर्ष के बाद इटली की फ़ौज ने सीनिया पर चढ़ाई की। लेकिन अदोवा की लड़ाई में इटली बुरी तरह से हार हुई। हाल (१९३६ ई०) में इटली ने ज्जित होकर इरीट्रिया और सुमालीलैंड की ओर से एबीसीनिया फिर धावा बोला। उसकी ौज को अधिक सफलता मिली। देस अबाबा और उसकी प्रदेश इटली के हाथ आया। इटली राजा एबीसीनिया का सम्राट बन गया। लेकिन गैस और ई जहाजों से दब जाने पर भी वीर एबीसीनियन लोगों ने ाज़ी की लड़ाई बराबर जारी रक्खी है। दुर्गम पहाड़ी भागों न समय भी इटली का अधिकार नहीं हो पाया है। वहाँ सीनिया की ही सरकार मानी जाती है। एबीसीनिया के ट हल सलासी योरुप में निर्वासित हैं। लेकिन वे वहाँ पने देश को आज़ाद करने में लगे हुए हैं।


इटेलियन

३२—एबीसीनिया

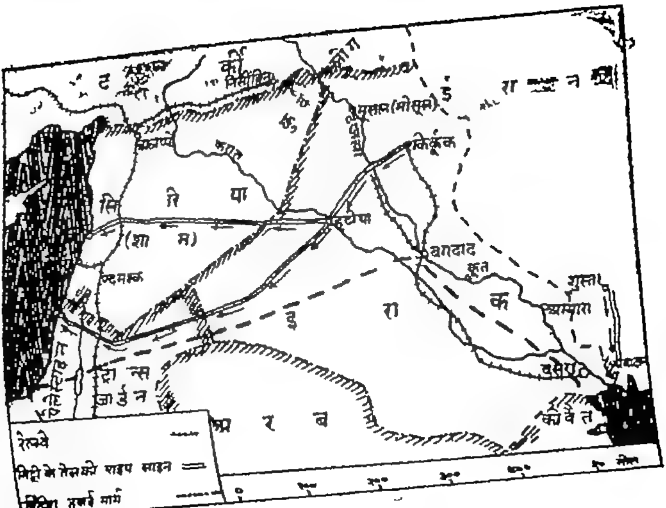
अय मे ५० वर्ष पहले से ही इटली की आँख एबीसीनिया
ागी थी। इटली ने पहले मसावा लिया और इरीट्रिया उप-
ा की नींव डाली। फिर इटली ने (इटेलियन) सुमालीलैंड
ाधिकार घोषित किया। दस वर्ष के बाद इटली की फौज ने
ीनिया पर चढ़ाई की। लेकिन अदोवा की लड़ाई में इटली
ी तरह से हार हुई। हाल (१९३६ ई०) में इटली ने
ेस होकर इरीट्रिया और सुमालीलैंड की ओर से एबीसीनिया
कर धावा बोला। उसकी ैज को अधिक सफलता मिली।
न अवाबा और उत्तरी प्रदेश इटली के हाथ आया। इटली
जा एबीसीनिया का सम्राट बन गया। लेकिन गैस और
जहाजों से दब जाने पर भी वीर एबीसीनियन लोगों ने
ी की लड़ाई बराबर जारी रक्खी है। दुर्गम पहाड़ी भागों
समय भी इटली का अधिकार नहीं हो पाया है। वहाँ
ीनिया की ही सरकार मानी जाती है। एबीसीनिया के
हेल सलासी योरुप में निर्वासित हैं। लेकिन वे वहाँ
ने देश को आजाद करने में लगे हुए हैं।


रियाद
विशाल दक्षिणी रेगिस्तान
ब्रिटिश संरक्षित प्रदेश

३३—इब्न सऊद की विजय

बड़ी लड़ाई के बाद अरब के बाहरी प्रदेशों का बटवारा फ्रांस और
ग्लैंड के बीच में हो गया। सिरिया में फ्रांस का और पलेस्टाइन,
न्स जार्डन (जार्डन नदी के इस पार वाला रेगिस्तानी प्रदेश) और
राक़ पर ब्रिटेन का अधिकार हो गया। प्रधान अरब में हजाज़ का
मक ब्रिटिश संरक्षण में आ गया। हजाज़ का शासक अरब के शेष
गों पर राज्य करने वाला था। लेकिन भीतरी अरब के नज्द प्रदेश
राज्य करने वाले वहाबी नेता इब्न सऊद के उत्थान से इनमें
तामक बाधा पड़ गई। इब्न सऊद ने बड़ी लड़ाई के पहले ही फारस
खाड़ी के किनारे वाले हासा प्रान्त को तुर्कों से छीन लिया।
ी लड़ाई के बाद हैल और जौफ़ के सरदार उसकी मातहती में
गये। उसने एक बार ट्रान्स जार्डन पर हमला करने की सोची।
र उसने लाल सागर के किनारे वाले असीर प्रदेश पर हमला किया
र १९२४-२५ में हजाज़ प्रदेश जीत लिया। इस प्रकार अरब देश
पूर्वी किनारे से पश्चिमी किनारे तक इब्न सऊद का राज्य हो गया।
३४ ई० में उसने यमन पर हमला किया। पर वह अभी तक
धीन है। ओमन और हज़रमौत के सुल्तान भी ब्रिटिश संरक्षण में
ओमन में मिट्टी के तेल के निकलने की आशा है। इसी से ब्रिटिश
सकों ने ओमन सुल्तान का हिन्दुस्तान में धूम-धाम से स्वागत
रा।

१९२७ में जिद्दा में ब्रिटेन और इब्न सऊद के बीच में एक सन्धि
। इसके अनुसार ब्रिटेन ने इब्न सऊद की स्वाधीनता मान ली।
९३२ में हजाज़ और नज्द के राज्य का नाम बदल कर सऊदी
ब रख दिया।



सि रि या
(शा म)
दमास्क
इ रा क
बगदाद
कूत
किर्कूक
बसरा
कोवेत
अ र ब
ई रा न
मूसल (मोसुल)
ट र्की
ट्रा न्स जार्डन
रेलवे
मिट्टी के तेल की पाइप लाइन

३४—इराक़ के मार्ग और मिट्टी का तेल

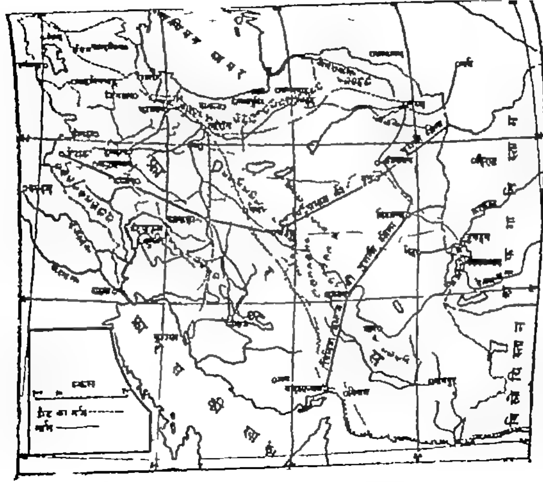
बड़ी लड़ाई के बाद इराक़ से तुर्की राज्य चला गया और उसके स्थान पर अंग्रेज़ी राज्य हो गया। १९३२ में ब्रिटिश मैंडेट (सीधा शासन) भी समाप्त हो गया। ब्रिटेन की हवाई फ़ौजें और हवाई जहाज़ों के अड्डे अब भी ज्यों के त्यों हैं।

ब्रिटिश हवाई जहाज़ों का प्रधान मार्ग बग़दाद होकर हिन्दुस्तान को जाता है। इससे बग़दाद में पुराने समय (जब केप आफ़ गुड होप होकर समुद्री रास्ते का पता नहीं चला था और पश्चिमी एशिया के स्थल मार्गों का मेल बग़दाद में ही होता था) की महिमा फिर कुछ हद तक लौट आई।

इराक़ के मूसल प्रांत (मोसूल विलायत) में किरकूक के मिट्टी के तेल के चश्मे बहुत अच्छे हैं। इनको लेने के लिये फ्रांस और तुर्की ने भी कोशिश की। लेकिन इनका अधिकार ब्रिटेन के हाथ में ही रहा। फिर यहाँ के तेल का कुछ भाग फ्रांस को भी मिलने लगा। इसी से इस तेल को लेने के लिये पाइप की एक लाइन किरकूक से सिरिया के ट्रिपोली बन्दरगाह तक जाती है। ब्रिटिश पाइप लाइन किरकूक से पैलेस्टाइन के हैफ़ा बन्दरगाह को जाती है।

३५– पेलेस्टाइन (फिलिस्तीन) के यहूदी उपनिवेश

बड़ी लड़ाई के अवसर पर ब्रिटेन ने यहूदियों से व्यापारिक लाभ उठाने के लिये पेलेस्टाइन में यहूदियों का राष्ट्रीय गृह (उपनिवेश) बनाने का वचन दिया। साथ ही साथ अरबी लोगों से सैनिक सहायता लेने और उन्हें शान्त रखने के लिये ब्रिटेन ने अरब प्रदेश को अविच्छिन्न रखने का वचन दिया। इन परस्पर विरोधी वादों का समन्वय कर दिखाना ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के लिए भी टेढ़ी खीर है। इस समय पेलेस्टाइन में ७३ फी सदी अरबी और १० फी सदी यहूदी लोग रहते हैं। इन १० फी सदी यहूदियों में आधे से अधिक यहूदी पेलेस्टाइन में ब्रिटिश मैंडेट होने के बाद बाहर से आकर बस गये हैं। लगभग एक तिहाई यहूदी आबादी खेती के काम में लग गई है। ज़मीन दिलाने का काम यहूदियों की ज़िओनिस्ट संस्था ने किया है। यह यहूदियों की सरकारी संस्था है और उपनिवेश सम्बन्धी मामलों को तय करती है। यहूदी लोग अधिकतर समुद्र-तट पर जाफा और एका बन्दरगाहों के बीच में बसे हैं। कुछ हाफा-नाज़रथ के दक्षिण में यरदान घाटी और गलिली झील के पास बसे हैं। कुछ लोगों का अनुमान है कि पेलेस्टाइन में ब्रिटिश साम्राज्य स्थायी रूप से बनाये रखने के लिये ही अरबी लोगों के पुराने दुश्मन यहाँ लाकर बसाये गये हैं। कुछ भी हो, अरबी लोग नये आये हुए यहूदी और ब्रिटिश शासकों का घोर विरोध करते हैं। इस समय पेलेस्टाइन में एक प्रकार का फौजी शासन (मार्शल ला) है।



३६–ईरान का तेल और रेलमार्ग

फारस देश का आजकल सरकारी नाम ईरान हो गया है। पहली लड़ाई के पहले यह देश दो साम्राज्यों के प्रभुत्व में था। उत्तरी भाग में रूसी और दक्षिणी भाग में ब्रिटिश प्रभुत्व था। इससे बहुत पहले १९०१ ई० में ब्रिटेन को ईरान में मिट्टी के तेल का पता लगाने का विस्तृत अधिकार मिल गया था। इसकी उत्तरी सीमा तेहरान के उत्तर-पश्चिम दक्षिण-पूर्व को जाती थी। इसी से एंग्लो पर्शियन आयल कम्पनी नाम की अंग्रेज़ी कम्पनी की बुनियाद पड़ी।

१९३२ ई० में रिज़ाशाह पहलवी की प्रबल सरकार ने इस कम्पनी के ... को रद्द कर दिया। इससे अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक जगत में तहलका मच गया। ब्रिटिश सरकार इस कम्पनी के हिस्सों की मालिक थी। ...लिये १९३३ ई० में फिर से समझौता हुआ। तेल का पता लगाने का ... आधा कम कर दिया गया। कुछ और भी परिवर्तन हुये। रिज़ा... ने इम्पीरियल एयरवेज़ के हवाई जहाज़ों का ईरान के प्रदेश के ... से होकर उड़ने से मना कर दिया। साथ ही फारस की खाड़ी के ...रिन द्वीप के ऊपर से ब्रिटिश संरक्षण दूर करवाने का भी प्रयत्न हो रहा ... ईरान में रत्नों का अभाव है। रूस, इराक और बलोचिस्तान की ...े लाइनें ईरान की सीमा के पास तक (तब्रेज़, कसरशीरीं, दुज़्दाब) ...र ठहर जाती हैं। फारस की खाड़ी से पाइप लाइन के पास-पास रेलवे लाइन शूस्तर तक गई है। इसको कास्पियन सागर तक ...ाने का विचार हो रहा है।



चीन के पड़ोस में विदेशी पूर्वी राज्य

७—चीन के पड़ोस मे विदेशी शक्तियों का जमघट

अगर चीन का देश योरुप से अधिक दूर न होता तो [भार]तवर्ष की तरह चीन भी बहुत पहल ही अपनी आजादी खो [देत]ा। जब धुम्रोंकश जहाज (स्टीमर) तेजी से चलने लगे तब [योरु]पीय शक्तियाँ धीरे धीरे चीन म घुसने का प्रयत्न करने लगीं। [चीन]् में समुद्रीय रास्ते से ही आसानी से घुसना हो सकता है। [पश्चि]म की ओर ऊँचे पहाड़ चीन को एशिया के दूसरे भागों से [अल]ग करते हैं। उत्तर की ओर से रूस का प्रभाव पड़ता है। योरुपीय शक्तियाँ उन्नीसवीं सदी के अन्त में और बीसवीं [सदी] के आरम्भ में जलमार्ग द्वारा चीन म प्रवेश करने लगीं। [इन्हों]ने अपने व्यापार को बढ़ाने के लिये चीन में स्वतन्त्र सन्धि-[सम्बन्]धी बन्दरगाह (Treaty Ports) स्थापित किये। [ज]ापान ने कोरिया और मचूकुओ (मचूरिया) में अपना [अधिकार] स्थापित कर लिया। अब वह उत्तरी चीन में बढ रहा है। [इंगलैंड] ने हांगकांग पर अधिकार करके कैन्टन और दक्षिणी चीन [के व्य]ापार का अपनाया। सिंगापुर का ब्रिटिश जहाजी अड्डा [यहाँ] से केवल १५०० मील दूर है। इण्डोचीन में फ्रांस का अधि-[कार है]। संयुक्तराष्ट्र अमरीका फिलीपाइन द्वीप में डटा हुआ है। [मचूरि]या में जापानी अधिकार हो जाने के कारण रूस का चीन [से सीध]ा सम्बन्ध नहीं रह सका है। रूस लोग अधिक दक्षिण [में दू]र पड़ गये हैं। वे अधिक बलवान भी नहीं हैं।



जापानी साम्राज्य

३८—जापानी साम्राज्य

पान ने योरुपीय शक्तियों की तरह नये हथियारों से सुस-
कर हाल में फैलने का प्रयत्न किया है। पर आगे बढ़ने
मजबूती के साथ हो रहा है। १८९४ ९५ में चीन को
उसने फारमूसा पर अधिकार कर लिया। १९०४-५ में
हरा कर जापान ने कोरिया और पोर्टआर्थर पर अधि-
लिया। १९१० में कोरिया देश खुल्लमखुल्ला जापानी
में मिला लिया गया। साथ ही साथ दक्षिणी मंचूरिया
न अपनी स्थिति को मजबूत करता गया।
लड़ाई में क्याओचाओ से जर्मनों को भगा कर जापान
अधिकार कर लिया। यही लड़ाई के समाप्त होने पर
ाओ नाम मात्र के लिये चीन को लौटा दिया गया,
शान्त महासागर के जिन द्वीपों पर जर्मनी का अधिकार
पर राष्ट्र-सघ की ओर से जापान राज्य करने लगा।
पर हमला करने के समय राष्ट्रसंघ की सदस्यता से
इस्तीफा दे दिया। लेकिन प्रशान्त महासागर के भूतपूर्व
शों पर जापान पूर्ववत् शासन करता है। मचूरिया में
जाने के बाद जापान ने उत्तरी चीन को अपनाने का
किया।

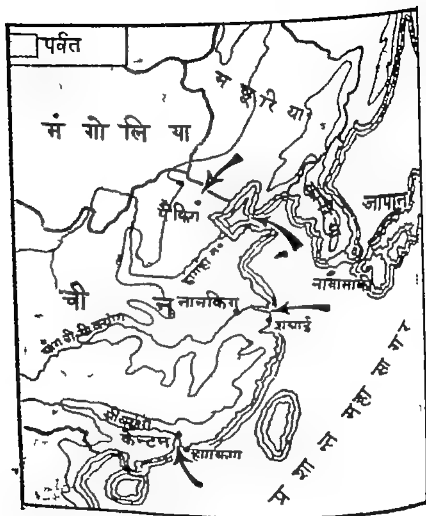


जापानी साम्राज्य

३८—जापानी साम्राज्य

ान ने योरुपीय शक्तियों की तरह नये हथियारों से सुस-
कर हाल में फैलने का प्रयत्न किया है। पर आगे बढ़ने
मजबूती के साथ हो रहा है। १८९४ ९५ में चीन को
उसने फारमूसा पर अधिकार कर लिया। १९०४-५ में
ो हरा कर जापान ने कोरिया और पोर्टआर्थर पर अधि-
र लिया। १९१० में कोरिया देश खुल्लमखुल्ला आपानी
ज्य में मिला लिया गया। साथ ही साथ दक्षिणी मंचूरिया
ान अपनी स्थिति को मजबूत करता गया।

ी लड़ाई में क्याओचाओ से जर्मनों को भगा कर जापान
ना अधिकार कर लिया। बड़ी लड़ाई के समाप्त होने पर
चाओ नाम मात्र के लिये चीन को लौटा दिया गया,
प्रशान्त महासागर के जिन द्वीपों पर जर्मनी का अधिकार
। पर राष्ट्र-संघ की ओर से जापान राज्य करने लगा।
ा पर हमला करने के समय राष्ट्रसंघ की सदस्यता से
ने इस्तीफा दे दिया। लेकिन प्रशान्त महासागर के भूतपूर्व
प्रदेशों पर जापान पूर्ववत् शासन करता है। मंचूरिया में
ी जान के बाद जापान ने उत्तरी चीन को अपनाने का
किया।



चीन मे घुसने के मार्ग

३६—चीन में घुसने के मार्ग

बाहर से चीन में प्रवेश करने के लिये तीन प्रधान जल-मार्ग
ों का नदियों ने बनाये हैं। ह्वांगहो उत्तर चीन में, यांगटिसी-
ांग मध्यचीन में और सीक्यांग दक्षिणी चीन में प्रवेश करने
लिये प्रधान मार्ग बनाती हैं। इन नदियों के मुहानों पर विदे-
यों का अड्डा है। हांगकांग द्वीप और पड़ोस की जमीन पर
ोजी अधिकार होने के कारण दक्षिणी प्रवेश मार्ग की कुंजी
न के हाथ में है।

यांगटिसीक्यांग के मुहाने पर बसे हुए शंघाई शहर में कई
शी शक्तियों का अड्डा है। इनमें संयुक्त-राष्ट्र अमरीका और
न प्रधान हैं। यांगटिसीक्यांग में सैकड़ों मील तक जहाज
सकते हैं। लेकिन इसका मुहाना विदेशियों के अधिकार में
के कारण विदेशी शत्रु इस नदी के मार्ग से लड़ाका जहाज
कर चीन के हृदय में छुरी भोंक सकते हैं। कोरिया पर
ानी अधिकार होने से चीन का उत्तरी जल-मार्ग जापान के
धिकार में है। सर्वोत्तम सुगम स्थल मार्ग उत्तर की ओर से
यहाँ पहले रूस का प्रभाव था। आजकल मंचूरिया में
ान का अधिकार होने से उत्तरी स्थलमार्ग की कुंजी जापान
हाथ में है। इसी ओर से जापान ने चीन पर आक्रमण करने
निश्चय किया है।

पर्वत

मंचूरिया

मंगोलिया

जापान

पैकिंग

नानकिंग

शंघाई

नागासाकी

ची

कैन्टन

हांगकांग

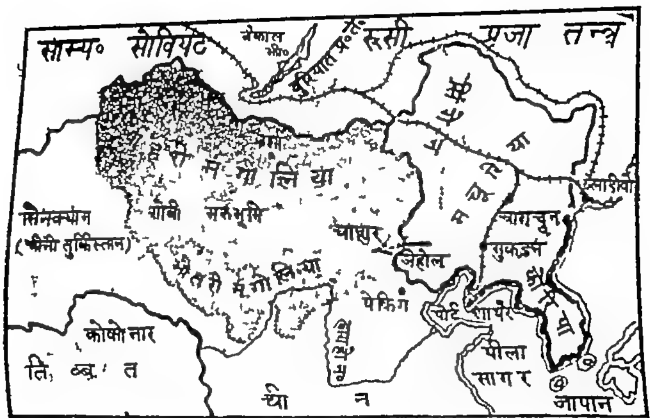
प्रशान्त महासागर

चीन में घुसने के मार्ग

४०—मंगोल लोगों का देश

रूसी-जापानी लड़ाई के बाद जापान ने रूस और चीन के
[बी]च वाले प्रदेश में बढ़ने की जी-तोड़ कोशिश की है। मंचूरिया
[प]र अधिकार करने के बाद जापान ने रूस और चीन के बीच
[एक] नई स्थलीय रुकावट डाल दी है। इससे इन दोनों के बीच
स्थल-मार्ग द्वारा आसानी से आना जाना नहीं हो सकता।
[मं]चूरिया में जापान का फौजी अड्डा स्थापित हो जाने से उसे
[उत्त]र, दक्षिण और पूर्व की ओर आक्रमण करने का अवसर
[मि]ल गया है।

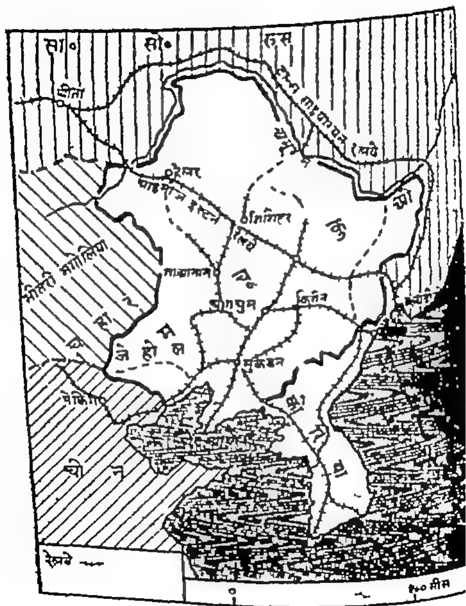
जापानी सिपाही और एजेन्ट बड़ी तेजी से हाल में भीतरी
(Inner) मंगोलिया में बढ़ रहे हैं। मंचूकुओ के सिगन
[प्र]ान्त में रहने वाले २० लाख मंगोल लोग उसके शासन में पहले
[ही] आ गये हैं। बचे हुए ३० लाख मंगोलों में से १० लाख
[ब]ाहरी (Outer) मंगोलिया के रेगिस्तान में, १० लाख भीतरी
[मं]गोलिया में और १० लाख चीनी तुर्किस्तान, तिब्बत के कोको
[नो]र प्रान्त और एशियाई रूस के बुरियत प्रजातन्त्र में रहते हैं।



साम्य० सोवियट रूसी प्रजा तन्त्र
बैकाल झी०
मंगोलिया
गोबी मरुभूमि
सिनक्यांग
(चीनी तुर्किस्तान)
चाहार
जेहोल
गुकडन
पेकिंग
पीला सागर
जापान
कोकोनार
ची न

४१—मंचूकुओ और रूस-जापान

जापान ने मन्चूरिया को चीन से छीन कर पहले ही मंचू-
ओ नाम से एक अलग राज्य स्थापित कर लिया । मन्चूरिया
चूकुओ) पर जापानी अधिकार हो जाने से रूस, साइबेरिया
प्रशान्त महासागर तट (व्लाडी वस्टक) के बीच में आने
के मार्गों में बाधा पड़ती है । ट्रान्स साईबेरियन रेलवे का
अमूर नदी के उत्तर में है । १८९६ में 'जार की सरकार ने
में सन्धि कर के व्लाडी वोस्टक तक उत्तरी मंचूरिया में
र चाइनीज ईस्टर्न रेलवे निकाल ली । क्रांति के बाद रूस ने
रिया के सब अधिकार छोड़ दिये । लेकिन इस रेलवे पर
ना अधिकार बना रक्खा । अन्त में रूस ने इस रेलवे के भी
अधिकार जापान (मंचूकुओ) के हाथ बेच दिये । इन दो
न रलवे लाइनों के अतिरिक्त जापान ने मंचूकुओ में कई नई
ई निकाल कर मंचूरिया (मंचूकुओ) में रेलों का जाल बा
लिया है ।



सा० सो० रूस
चीता
भीतरी मंगोलिया
जे हो ल
मुकडन
को रि या
चीन
रेलवे
० ५०० मील

४१—मंचूकुओ और रूस-जापान

जापान ने मन्चूरिया को चीन से छीन कर पहले ही मंचू-
। नाम से एक अलग राज्य स्थापित कर लिया । मन्चूरिया
(कुओ) पर जापानी अधिकार हो जाने से रूस, साइबेरिया
प्रशान्त महासागर तट (व्लाडी वस्टक) के बीच में आने
क मार्गों म बाधा पड़ती है। ट्रान्स साइबेरियन रेलवे का
अमूर नदी के उत्तर में है। १८९६ में 'ज़ार की सरकार ने
से सन्धि कर के व्लाडी वॉस्टक तक उत्तरी मंचूरिया में
: चाइनीज़ ईस्टर्न रेलवे निकाल ली। क्रांति के बाद रूस ने
त्या क सब अधिकार छोड़ दिये। लेकिन इस रेलवे पर
ा अधिकार बना रक्खा। अन्त में रूस ने इस रेलवे के भी
अधिकार जापान (मंचूकुओ) के हाथ बेच दिये। इन दो
न रेलवे लाइनों के अतिरिक्त जापान ने मंचूकुओ में कई नई
ं निकाल कर मचूरिया (मंचूकुओ) में रेलों का जाल सा
लिया है।



चीन विच्छेद

४२—चीन-विच्छेद

गत ९० वर्षों से चीन के प्राचीन साम्राज्य का विध्वंस करने में कई योरुपीय शक्तियाँ लग गई। ब्रिटेन, रूस और फ्रांस ने चीन के कई बाहरी भाग दबा लिये। जापान ने कोरिया को छीनने के बाद मंचूरिया, भीतरी मंगोलिया और उत्तरी चीन को हड़पना आरम्भ कर दिया। नानकिंग की चीनी सरकार का प्रभुत्व मध्य चीन और दक्षिणी चीन में बहुत प्रबल है। पश्चिम के भीतरी भागों में मजदूरों और किसानों का पंचायती राज्य है। इनके शत्रु इन्हें अक्सर डाकू कहते हैं। वे फौजी शासकों का विरोध करते हैं। इन सब को एकता के सूत्र में बाँध कर चियांग-काई-शेक ने चीन में एक प्रबल प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया। इतने ही में जापान ने युद्ध छेड़ दिया।

—रेलवे
कोयले की खानें
बड़े कारबारी शहर
मंचूरिया
पेकिंग
टिन्टसिन
पोर्ट आर्थर
शान सी
हो पी
शान टुंग
क्याओ चाउ
हो नान
सूचाउ
हू पेह
क्यांग सी
चे क्यांग
आबादी वाले प्रदेश
फू केन
फूचाउ

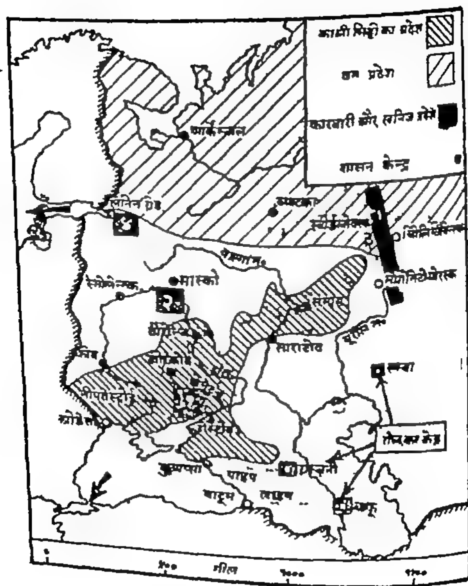
४३—नानकिंग की सरकार

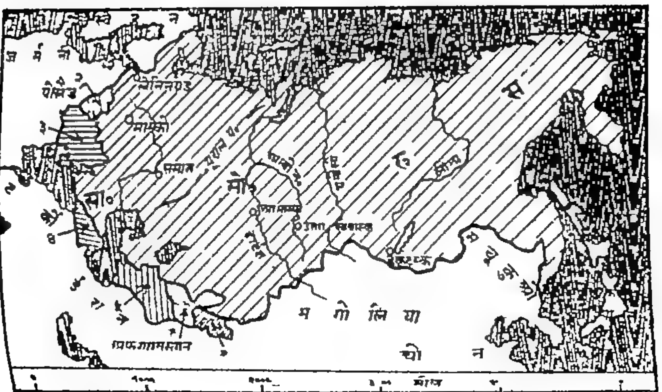
नानकिंग की सरकार च्यांग काई शेक की अध्यक्षता में मध्य चीन के उन प्रान्तों पर राज्य करती है जो यांगटसीक्यांग उत्तर और दक्षिण में स्थित हैं। उत्तर की पुरानी राजधानी । या पेपिंग में जापानी प्रभुत्व है। च्यांग काई शेक की शक्ति केन्द्र कैन्टन था। यहाँ चीनी प्रजातन्त्र के संस्थापक सन-का प्रभुत्व था। हांगकाओ-कैन्टन रेलवे के बन जाने ांगटसी नाग और कैन्टन प्रदेश एक हो गये हैं। इसी भाग ार की अधिकता है और इसी भाग में चीन की सबसे [illegible] बसी हुई है।

४३—नानकिंग की सरकार

नानकिंग की सरकार च्यांग काई शेक की अध्यक्षता में मध्य चीन के उन प्रान्तों पर राज्य करती है जो यांग्टिसीक्यांग के उत्तर और दक्षिण में स्थित हैं। उत्तर की पुरानी राजधानी पेकिंग या पेपिंग में जापानी प्रमुत्व है। च्यांग काई शेक की शक्ति का केन्द्र कैन्टन था। यहीं चीनी प्रजातन्त्र के संस्थापक सन-यातसेन का प्रमुत्व था। हांगकाओ-कैन्टन रेलवे के बन जाने से यांग्टिसीक्यांग और कैन्टन प्रदेश एक हो गये हैं। इसी भाग में कारबार की अधिकता है और इसी भाग में चीन की सबसे घनी आबादी बसी हुई है।




काली मिट्टी का प्रदेश
वन प्रदेश
कारखाने और खनिज प्रदेश
शासन केन्द्र
मास्को
सारातोव
तेल का केन्द्र
मील

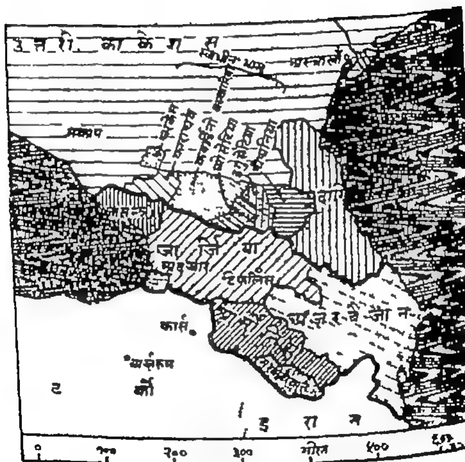


लेनिनग्राड
मास्को
मंगोलिया
चीन
अफगानिस्तान

४५—नवीन रूस के राजनैतिक विभाग

नवीन रूस को अल्पसंख्यक जातियों की सबसे विकट
समस्याओं को हल करना पड़ा। १९२६ की मनुष्य-गणना के
अनुसार रूस में १७४ भिन्न भिन्न जातियाँ रहती हैं। समस्त
जन-संख्या लगभग १५ करोड़ है, जो हमारे देश की लगभग
आधी है। इनमें ३/४ लोग योरुपीय रूस में रहते हैं। एशियाई रूस
का क्षेत्रफल बहुत बड़ा है। दोनों ही भागों में कई प्रकार की
प्राकृतिक सम्पत्ति है।

वर्तमान साम्यवादी सोवीट रूसी प्रजातन्त्र संघ में सात बड़े
बड़े प्रजातन्त्र और कई छोटे छोटे स्वाधीन (घरेलू प्रबन्ध में)
जिले शामिल हैं। बड़े बड़े प्रजातन्त्रों में कई छोटे छोटे प्रजातन्त्र
राष्ट्र शामिल हैं। सात बड़े-बड़े प्रजातन्त्र राष्ट्र ये हैं —(१) रूसी
सोवीट साम्यवादी प्रजातन्त्र संघ। इसमें अधिकांश योरुप और
पूरा साइबेरिया शामिल है। (२) श्वेत रूसी प्रजातन्त्र पश्चिमी
योरुप की सीमा को छूता है। (३) यूक्रेन प्रजातन्त्र। यहाँ खेती
बहुत अच्छी होती है। (४) ट्रांस काकेशस प्रदेश के छोटे छोटे
पहाड़ी प्रजातन्त्र राष्ट्र (जार्जिया, आर्मेनिया, अजरबैजान)। (५)
ताजिकिस्तान। (६) उजबेकिस्तान, और (७) तुर्कमानिस्तान।
आखिरी तीन प्रजातन्त्र संघ के सब एशिया में स्थित हैं।

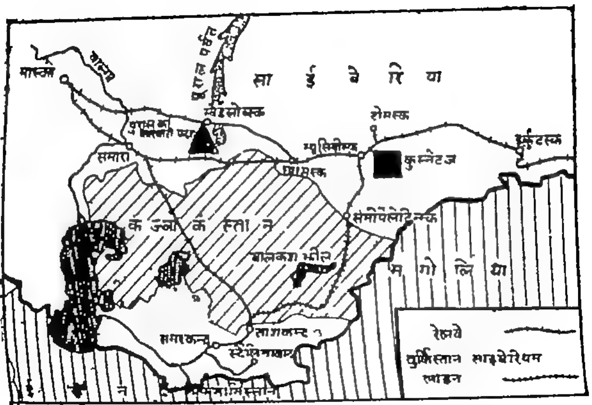


उत्तरी काकेशस
जार्जिया
कार्स
अर्दहन
टर्की
इरान
0 100 200 300 मील 500

४७—काकेशास प्रदेश

काकेशस प्रदेश कास्पियन सागर और काले सागर के बी
स्थित है। मिट्टी के तेल की अधिकता होने के कारण इ
श का महत्व बहुत बढ़ गया है। १९१७ की क्रान्ति के बाद यह
१९२१ ई० तक गृह कलह चलती रही। इसके बाद रूसी प्रज
त्र सरकार ने यहाँ कई स्वाधीन प्रजातन्त्र स्थापित करके यह
लोगों की राजनैतिक माँगें पूरी कीं।

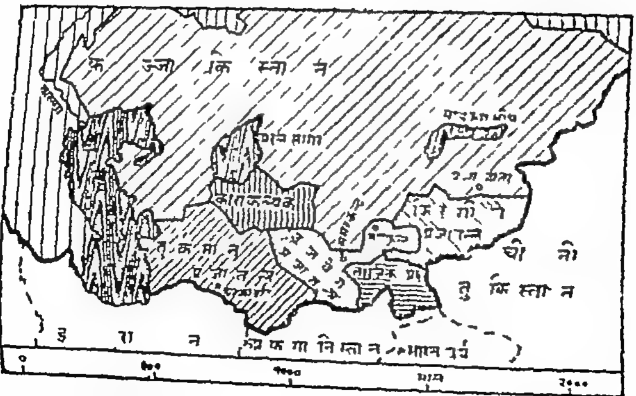
(१) काकेशस प्रदेश के उत्तरी भाग में रूसी साम्यवादी सोवीट
ातन्त्र संघ का शासन है। इसमें कई छोटे छोटे स्वाधीन जिले
मिल हैं। (२) कास्पियन सागर के पश्चिमी किनारे पर दागि-
न का प्रजातन्त्र है। (३) ट्रान्स काकेशस प्रजातन्त्र-संघ में
र्जिया (जिसकी राजधानी टिफलिस है), आर्मेनिया (राज-
ी एरीवान) और अजरबैजान (राजधानी बाकू) शामिल
इन तीनों प्रजातन्त्रों में भी एक दो स्वाधीन जिले शामिल हैं।


मास्को
सा इ बे रि या
समारा
कुज्नेटज
क ज़ा क स्ता न
म गो लि या
रेलवे
तुर्किस्तान साइबेरियन

४८—पश्चिमी साइबेरिया और तुर्किस्तान

रूसी सरकार पश्चिमी साइबेरिया के कारबार बढ़ाने और
ने योरुपीय भाग से जोड़ने का घोर प्रयत्न कर रही है।
नेट्ज़ में ,डोनेट्ज़ से छः गुना कोयला है। कुस्नेट्ज़ में ४५०
लियन टन कोयला अन्दाजा गया है। यह भाग यूराल क
निज और कारबारी प्रदेश से जोड़ा जा रहा है।

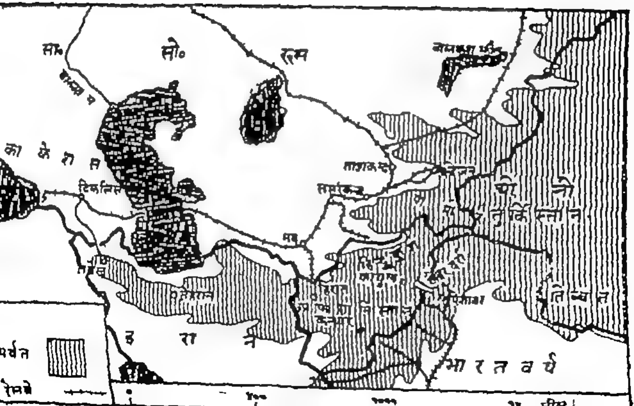
इसके दक्षिण में तुर्किस्तान है, जो आजकल कज़ाकस्तान
आतन्त्र और कई छोटे छोटे स्वाधीन ज़िलों में बँटा हुआ है।
ह प्रदेश तुर्क-साइबेरियन रेलवे द्वारा जोड़ लिया गया है। रेलवे
ाशकन्द से उत्तर की ओर बढ़ती है। यह लाइन दुनिया भर में
ब से बड़ी रेलवे लाइन है।


चीनी
तुर्किस्तान
अफगानिस्तान

४९—रूसी मध्य एशिया की जातियाँ

उन्नीसवीं सदी के अन्तिम भाग में तुर्किस्तान रूसी साम्राज्य में मिला लिया गया। ज़ार का साम्राज्य अफग़ानिस्तान को छूने लगा। ज़ार की इस बढ़ती हुई शक्ति और ब्रिटिश भारत पर भावी आक्रमण को रोकने के लिये ब्रिटिश राजनीतिज्ञ तरह तरह के प्रयत्न करने लगे। क्रान्ति के बाद इस प्रदेश में जो गृह-कलह फैली वह १९२४ तक शान्त न हुई। इस समय यहाँ निम्न राजनैतिक विभाग हैं —

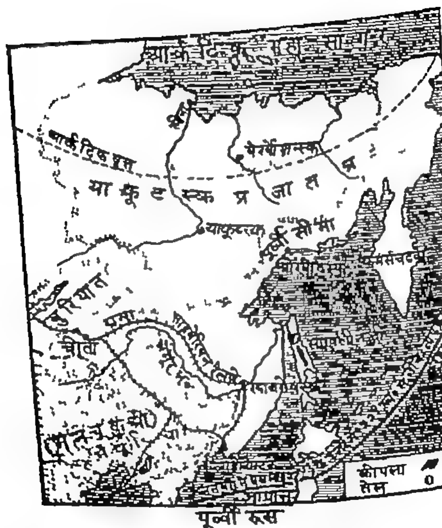
कज़ाकस्तान प्रजातन्त्र राज्य में अधिकतर घुमक्कड़ किरगीज़ लोग रहते हैं। काराकल्पक का प्रदेश स्वाधीन है। तुर्कमानिस्तान में तुर्कमान मुसलमान रहते हैं। उज़बेकिस्तान में कपास खूब होती है। यहीं इस प्रदेश में सब से अधिक आबादी है। यहीं मध्य एशिया के तीन प्रधान नगर (ताशकन्द, समरकन्द और बुखारा) स्थित हैं। ताजकिस्तान पहाड़ी प्रदेश है। इसके पूर्वी भाग में ऊँचा पठार या दुनिया की छत है। किरगीज़िया में ढोर पालने वाले लोग रहते हैं।


सो०
रूस
ई रा न
भा र त व र्ष
पर्वत
रेलवे

५०—अफगानिस्तान और मध्य एशिया की सीमायें

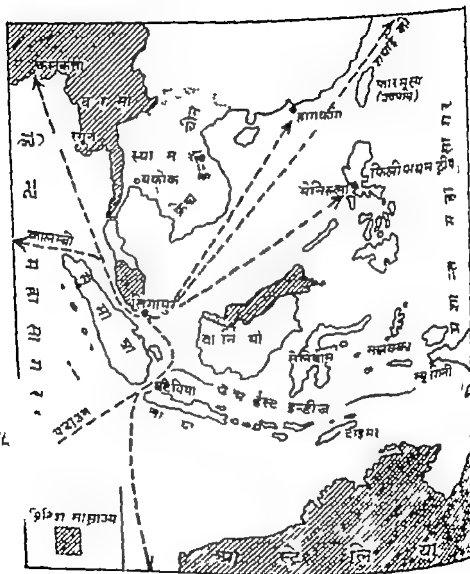
अफगानिस्तान का पहाड़ी देश उत्तरी हिन्दुस्तान को एशियाई रूस से अलग करता है। रूस और ब्रिटेन की आपस की पुरानी फूट के कारण अफगानिस्तान में रेल न खुल सकी। लेकिन रूस की रेलें (मर्व के आगे कुश्क के पास) अफगानिस्तान की उत्तरी सीमा को छूती हैं। इस की दक्खिणी सीमा के पास उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त और बलोचिस्तान की रेलवे लाइनें आकर रुक जाती हैं। हिरात और कन्धार तथा पेशावर और काबुल होकर हिन्दुस्तान की रेलवे लाइनें बड़ी आसानी से रूसी रेलों से जोड़ी जा सकती हैं।

अफगानिस्तान में कई बार ब्रिटिश फौजों ने प्रवेश किया १९२१ में ब्रिटेन और अफगानिस्तान के बीच में नई सन्धि हुई। इस के अनुसार अफगानिस्तान की स्वाधीनता स्वीकार कर ली गई। रूस के विशेष अधिकार कुछ कम कर दिये गये। हिन्दुस्तान होकर अफगानिस्तान को हथियार और फौजी सामान लाने की सुविधा कर दी गई।


पूर्वी रूस

५१—एशिया में रूस का सब से अधिक पूर्वी प्रदेश

रूस का सब से अधिक पूर्वी प्रदेश दो भागों में बँटा है। याकुट्स्क प्रजातन्त्र सब से अधिक बड़ा है। लेकिन इसकी जन संख्या सब से कम है। सुदूर पूर्वी प्रजातन्त्र में कुछ आर्कटिक तट और समूचा रूसी प्रशान्त महासागर का तट शामिल है। इसी में कमचटका प्रायद्वीप और आधा (उत्तरी) साखालिन द्वीप जापान के अधिकार में है। इस प्रदेश की राजधानी खबारोव्स्क नगर है जो अमूर नदी पर स्थित है। साखालिन के कोयले और मिट्टी के तेल को छोड़कर इस प्रदेश की प्राकृतिक सम्पत्ति का कुछ भी उपयोग नहीं हुआ है। लेकिन अगली पंचवर्षीय योजना में रूस ने यहाँ कई रेलवे, कारखाने और व्लाडीवोस्टक नगर में एक बड़ा बन्दरगाह बनाने का निश्चय किया है। मंचूरिया में जापानी प्रभुत्व हो जाने से रूस को इस प्रदेश को जापान का सदा भय लगा रहता है। इस समय केवल ट्रान्स साइबेरियन रेलवे इस भाग को दूसरे भागों से जोड़ती है। इसी रूसी हवाई जहाजों का एक बड़ा अड्डा अचानक हमले को रोकने के लिये बनाया गया है।

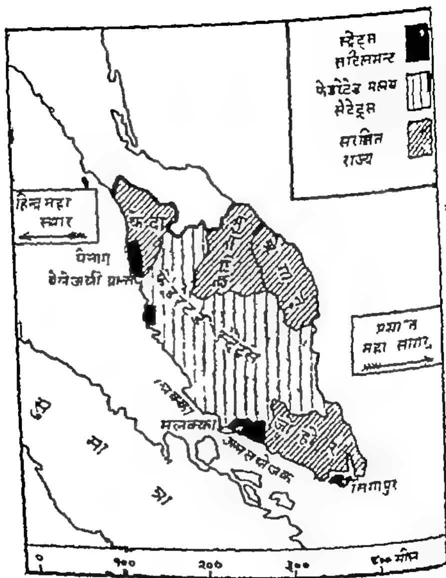


स्याम
फारमूसा
फिलीपाइन द्वीप
बोर्नियो
डच ईस्ट इन्डीज

५२-दक्षिणी-पूर्वी देशों का समुद्री चौराहा—सिंगापुर

विशाल प्रशान्त महासागर का पूर्वी दरवाजा पनामा और और पश्चिमी दरवाजा सिंगापुर है। सिंगापुर में ब्रिटिश साम्राज्य के पूर्वी भागों की रक्षा के लिये सबसे बड़ा जहाजी अड्डा बनाया गया है। जब १८१९ में रेफिल्स साहब ने सिंगापुर को मिलाया तो उन्होंने लिखा कि सिंगापुर के मिलाने से ब्रिटिश साम्राज्य को न केवल एक द्वीप मिला वरन चीन-जापान और स्याम, कम्बोडिया के लिये जलमार्ग का अधिकार मिल गया।

सिंगापुर के जहाजी अड्डे के बनाने में लगभग १५ करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं। इस अड्डे से न्यूज़ीलैंड और आस्ट्रेलिया की रक्षा करने में सुविधा होगी। यहाँ से चीन और जापान में भी ब्रिटिश हितों की रक्षा की जा सकती है। कुछ लोगों का अनुमान है कि इस अड्डे के सम्बन्ध में पूर्वी द्वीप समूहों की रक्षा के लिये हालैंड वालों ने ब्रिटिश से समझौता कर लिया है। लेकिन जापान इसको सन्देह की दृष्टि से देखता है।

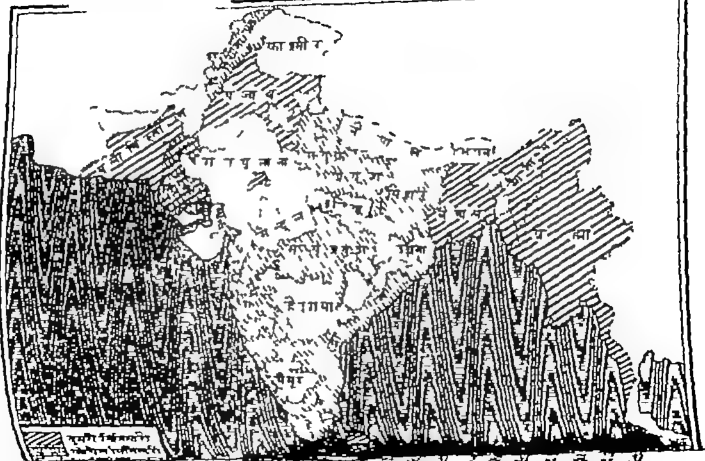


स्ट्रेट्स सटिलमन्ट
फेडरेटेड मलय स्टेट्स
संरक्षित राज्य
हिन्द महा सागर
पिनाग
वेलेजली प्रान्त
प्रशान्त महा सागर
मलक्का
सिंगापुर
० १०० २०० ३०० ४०० मील

५३—मलय प्रायद्वीप

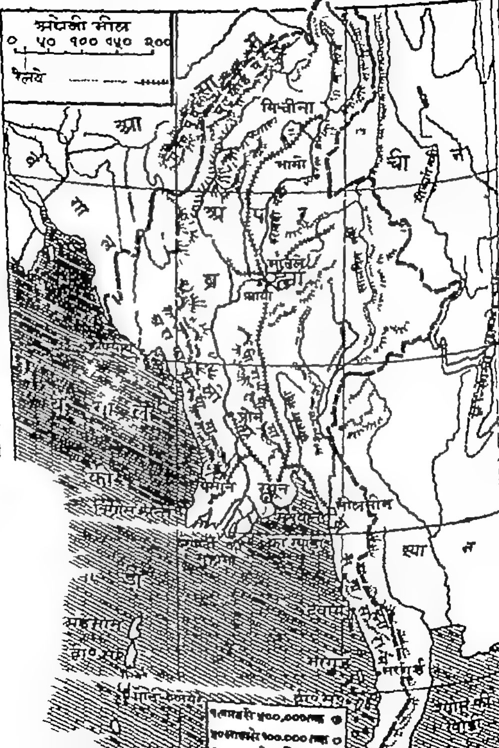
हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर के बीच में मलय प्रायद्वीप की स्थिति बड़े मार्के की है। अठारहवीं सदी के प्राय अन्त म ईस्टइंडिया कम्पनी ने पेनाग में अपना अड्डा जमाया। मलक्का पर पहले पुर्चगालियों का अधिकार था। फिर डच (हालैंड) के लोगों ने यहाँ अपना अधिकार जमाया। अन्त में उनसे अँग्रेजों ने इसे छीन लिया। इसके बाद अँग्रेजों ने सिंगापुर में अपना उपनिवेश बनाया। इस समय समस्त मलय प्रदेश पर ब्रिटिश अधिकार है। पेनाग वेलेजली प्रान्त मलक्का और सिंगापुर म ब्रिटिश क्राउन कलोनी (स्ट्रेट्स सेटिलमेन्ट) है। चार फेडरेटेड मेले स्टेट्स (रियासतों में) ब्रिटिश प्रभुत्व है नाम मात्र क लिये इन रियासतों में अलग अलग सुलतान हैं। लय प्रायद्वीप के दूसरे (कड़ा, केलन्तान ट्रेंगानू और जोहोर ज्यों क शासक अलग अलग हैं। वे ब्रिटिश संरक्षता में हैं रि अँग्रेजी सलाहकारों के अनुसार चलते हैं।

प्रय से ६० वर्ष पहले यहाँ टिन की खानों का पता चला गी से अँग्रेजों ने इस प्रायद्वीप के भीतरी भागों में घुसना र किया आज कल रबर और टीन यहाँ की प्रधान सम्पत्ति रबर के बगीचों में हिन्दुस्तानी और टीन की खानों में चीनी दूर काम करते हैं। इस समय हिन्दुस्तानी और चीनी लोगों सख्या मिलकर यहाँ के मूल निवासी मलय लोगों से भी क है।



५४—भारतवर्ष

भारतवर्ष का लगभग $\frac{1}{3}$ भाग देशी राज्यों और शेष $\frac{2}{3}$ भाग [ब्रि]टिश प्रान्तों में बटा हुआ है। कुछ देशी राज्य इतने पुराने हैं [कि] वे अंग्रेजों के आने के पहले भी मौजूद थे। कुछ राज्य पहले [इ]तने प्रबल थे कि उन्होंने अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी से [ब]राबरी की सन्धि की। लेकिन देशी राज्यों के आपस की फूट से [उन]की बराबरी मातहती या पराधीनता में बदल गई। जब राजा [स्]वयं पराधीन हो और सब काम रेजिडेण्ट या एजंट के इशारे से [क]रता हो तो वहाँ प्रजा की पराधीनता दुगनी बढ़ जाती है। [दे]शी राज्यों के कुछ भोले भाले लोगों को अपनी दुहरी पराधीनता [क]ा पता न लगा। वे अपने राजा को स्वतन्त्र समझ कर अपने को [भ]ी स्वाधीन मानने लगे। लेकिन ब्रिटिश भारत में एकदम अँग्रेजी [श]ासन हो जाने से लोगों को विदेशी शासन खटकने लगा। पहले [१]८५७ में लोगों ने विदेशी सत्ता का सशस्त्र मुकाबिला ...



अंग्रेजी मील
० ५० १०० १५० २००
रेलवे
मिचीना
भामो
मांडले
रंगून
मौलमीन

बरमा और स्याम

बरमा और हिन्दुस्तान के बीच में जंगली और पहाड़ी मार्ग दुर्गम है। समुद्री मार्ग अधिक सुगम है। रंगून का बन्दरगाह कलकत्ते से केवल ७००० मील और मद्रास से १००० मील दूर है। फिर भी हिन्दुस्तान और बरमा का घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। ब्रिटिश राज्य में शामिल हो जाने पर भी हिन्दुस्तानी तरह तरह के कामों में वहाँ लग गये। जब हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय आन्दोलन ज़ोर पकड़ने लगा तब उसका असर बरमा में भी फैलने लगा। बरमा का मिट्टी का तेल, सागौन की लकड़ी और चावल ब्रिटिश व्यापार के लिये बड़े काम की चीज़ है। भारतवर्ष के राष्ट्रीय आन्दोलन से अलग रखने के लिये नये शासन विधान के अनुसार १९३५ ई० में बरमा भारतवर्ष से अलग कर दिया गया।

स्याम एक बरमा और फ्रेंच इण्डोचीन के बीच में स्थित है। ब्रिटेन और फ्रांस दोनों ही ने स्याम से लाभ उठाने की भरसक कोशिश की। पर दोनों की पुरानी अनबन से स्याम की स्वाधीनता कायम रही। हाल में जापान ने भी इधर अपना प्रभाव बढ़ाने की सोची। स्याम में कई बार राजनैतिक उथल पुथल हुई। १९३२ के मार्च महीने में यहाँ के राजा प्रजाधिपाक ने सिंहासन त्याग दिया। १९३१ और १९३४ के बीच में स्याम में जापानी व्यापार २०० फी सदी बढ़ गया। जब से ब्रिटेन ने सिंगापुर में जहाज़ी अड्डा बनाया है तब से जापान ने क्राएथक स्याम में होकर जहाज़ी नहर निकालने की धुनि की है। यदि इस में जापान को सफलता मिली तो सिंगापुर का महत्व मिट्टी में मिल जायगा। जिस प्रकार पनामा संयुक्त राष्ट्र अमरीका की नहर है उसी प्रकार क्रा नहर जापान के हाथ में होगी।



सो० रुस
म गो लि या
०उरुमची
सि क्या ग
(चीनी - तुर्कीस्तान)
भी त री
म गो लि या
हि न्दु स्ता न
कलकत्ता
मील

[

५६—तिब्बत

तिब्बत और भारतवर्ष का घनिष्ट भौगोलिक सम्बन्ध है। जब से भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित हुआ तब से ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत में भी अपना प्रभाव जमाने का प्रयत्न किया उधर रूस की जारशाही भी तिब्बत को अपनाने लगी। १९०३ ४ में ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत को व्यापारिक द्वार खोलने के लिये मजबूर करने के लिये एक सैनिक टोली लासा (तिब्बत की राजधानी)को भेजी।

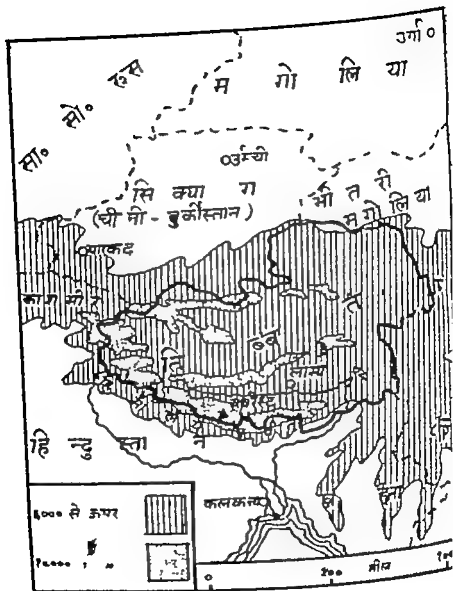
१९११ में चीनी क्रान्ति के बाद तिब्बत में चीनी आधिपत्य फिर मान लिया गया। हाल में चीन में जो गड़बड़ी हुई उससे लाभ उठा कर ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत के दलाई लामा से मैत्री करके वहां ब्रिटिश प्रभाव फिर स्थापित कर लिया। पर ताशी लामा के लौटने से आशा है कि तिब्बत फिर पूर्ण स्वाधीन हो जावे और वहाँ विदेशियों के हथकंडे न चलने पावें।


उर्गा ०
म गो लि या
सो० सो० रूस
०उरुम्ची
सि क्या ग
(चीनी - तुर्कीस्तान)
भी त री
म गो लि या
हि न्दु स्ता न
कलकत्ता
मील

५६—तिब्बत

तिब्बत और भारतवर्ष का घनिष्ट भौगोलिक सम्बन्ध है। जब से भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित हुआ तब से ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत में भी अपना प्रभाव जमाने का प्रयत्न किया उधर रूस की जारशाही भी तिब्बत को अपनाने लगी। १९०३ ४ में ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत को व्यापारिक द्वार खोलने के लिये मजबूर करने के लिये एक सैनिक टोली ल्हासा (तिब्बत की राजधानी) को भेजी।

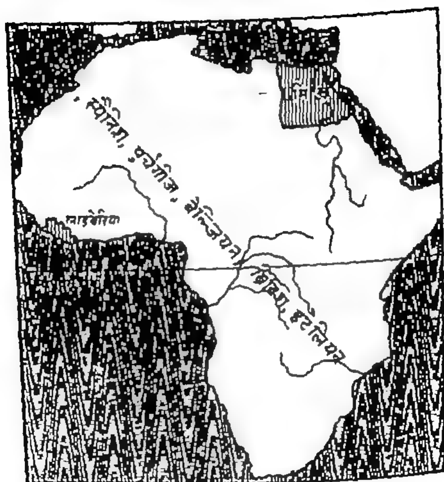
१९११ में चीनी क्रान्ति के बाद तिब्बत में चीनी आधिपत्य फिर मान लिया गया। हाल में चीन में जो गड़बड़ी हुई उससे लाभ उठा कर ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत के दलाई लामा से मैत्री करके वहां ब्रिटिश प्रभाव फिर स्थापित कर लिया। पर ताशी लामा के लौटने से आशा है कि तिब्बत फिर पूर्ण स्वाधीन हो जावे और वहाँ ब्रिटेनिया के हथकण्डे न चलने पावें।


उर्गा
मंगोलिया
सो० रूस
उरुम्ची
सिकयांग
(चीनी-तुर्किस्तान)
भीतरी मंगोलिया
हिन्दुस्तान
कलकत्ता
६००० से ऊपर
मील

५६—तिब्बत

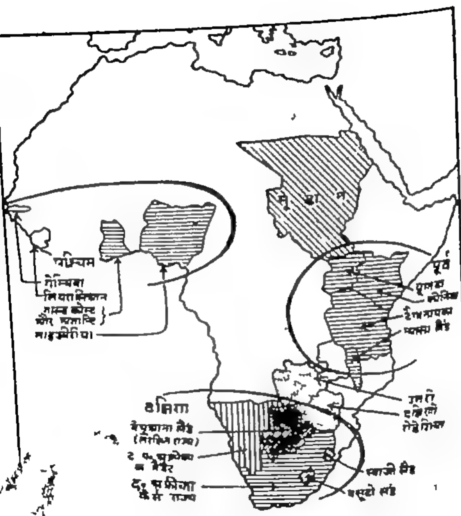
तिब्बत और भारतवर्ष का घनिष्ट भौगोलिक सम्बन्ध है। जब से भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित हुआ तब से ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत में भी अपना प्रभाव जमाने का प्रयत्न किया इधर रूस की जारशाही भी तिब्बत को अपनाने लगी। १९०३ ४ में ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत को व्यापारिक द्वार खोलने के लिये मजबूर करने के लिये एक सैनिक टोली लासा (तिब्बत की राजधानी) को भेजी।

१९११ में चीनी क्रान्ति के बाद तिब्बत में चीनी आधिपत्य फिर मान लिया गया। हाल में चीन में जो गड़बड़ी हुई उससे लाभ उठा कर ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत के दलाई लामा से मैत्री करके वहां ब्रिटिश प्रभाव फिर स्थापित कर लिया। पर ताशी लामा के लौटने से आशा है कि तिब्बत फिर पूर्ण स्वाधीन हो जावे और वहां विदेशियों के हथकंडे न चलने पावें।



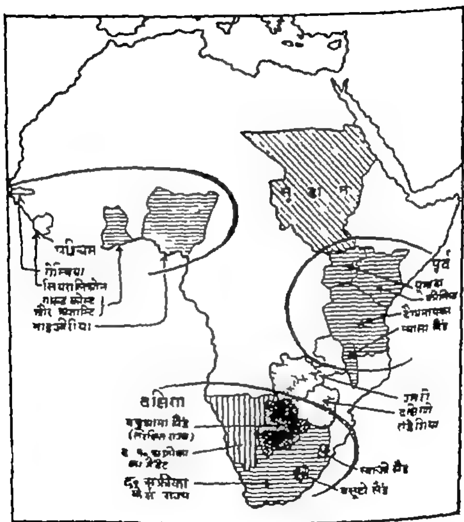
५७–अफ्रीका के स्वाधीन राज्य

योरपीय अन्वेषण के साथ साथ अफ्रीका का बटवारा भी आरम्भ हो गया। उन्नीसवीं सदी के अन्त में तीन राज्यों को छोड़ सारे अफ्रीका पर योरपीय लोगों का अधिकार हो गया। इन तीन भागों में एबीसीनिया को १९३६ में हाल ही में इटली ने हड़प लिया। स्वेज नहर खुलने के बाद मिस्र देश पर ब्रिटेन की नजर लगी। १९१४ ई० में बड़ी लड़ाई छिड़ने पर टर्की के नाम मात्र के अधिकार को खतम कर के ब्रिटेन ने मिस्र देश को सूडान सहित अंग्रेजी राज्य में मिला लिया। बड़ी लड़ाई के बाद मिस्र देश को नाम मात्र की स्वाधीनता दे दी गई। सूडान पर ब्रिटिश अधिकार रहा। केनाल जोन (नहर के देश) जैसे काहिरा और सिकन्दरिया में अंग्रेजी फौज बनी रही। मिस्र देश की विदेशी नीति ब्रिटिश हितों के अनुसार निर्धारित होती रही। १९३६ की सन्धि के अनुसार मिस्र देश की स्थिति में काफी सुधार हुआ।


पश्चिम
पूर्व

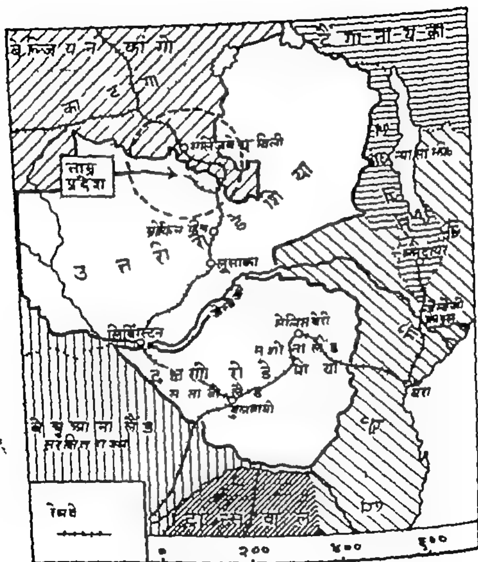
५९—अफ्रीका में ब्रिटिश साम्राज्य

अफ्रीका में ब्रिटिश प्रदेश एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैले हुये हैं। नाइजीरिया और पश्चिमी तट के प्रदेशों में कोई अंग्रेज बसने के लिये नहीं गया है। यहां की जलवायु उनके लिये अत्यन्त नम और गरम है। पर यहां की उपज से लाभ उठाने के लिये यहाँ अंग्रेजी शासन है। पूर्वी अफ्रीका में यूगांडा, कीनिया टँगानीका और न्यासालैंड शामिल हैं। यहाँ ऊँचे भागों की जलवायु अच्छी है। यहां अंग्रेज लोग बसने लगे हैं। इसलिये यहाँ बसे हुए मूल निवासियों और हिन्दुस्तानियों की समस्या उठ खड़ी हुई है। दक्षिण अफ्रीका में गोरे उपनिवेश अधिक संख्या में बसे हैं। पर इन दोनों की संख्या यहाँ बसे हुए मूल निवासियों और हिन्दुस्तानियों के मुकाबले में कुछ भी नहीं है। इसी से गोरों के हाथ में शासन रखने के लिये हब्शियों और हिन्दुस्तानियों को शासन प्रबन्ध में समान अधिकार नहीं दिया है। पूर्वी अफ्रीका और दक्षिणी अफ्रीका के बीच में भीतर की ओर रोडेशिया स्थित है। उत्तर की ओर सूडान का बड़ा प्रदेश है।


पश्चिम
सियरालियोन
नाइजीरिया
सू डा न
पूर्व
दक्षिण

५६—अफ्रीका में ब्रिटिश साम्राज्य

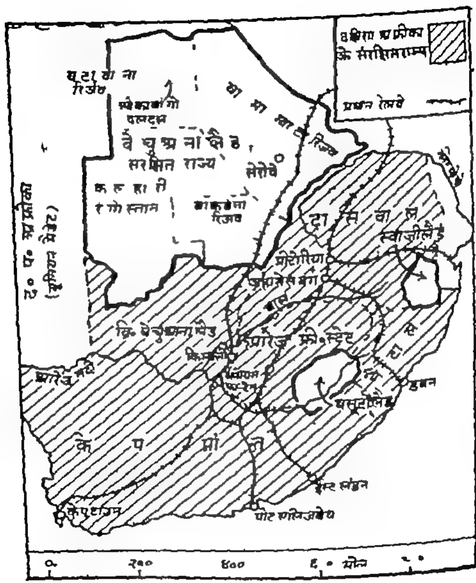
अफ्रीका में ब्रिटिश प्रदेश एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैले हुये हैं। नाइजीरिया और पश्चिमी तट के प्रदेशों में कोई अंग्रेज बसने के लिये नहीं गया है। यहा की जलवायु उनके लिये अत्यन्त नम और गरम है। पर यहां की उपज से लाभ उठाने के लिये यहाँ अंग्रेजी शासन है। पूर्वी अफ्रीका में युगाडा, कीनिया टंगानीका और न्यासालैंड शामिल हैं। यहाँ ऊँचे भागों की जलवायु अच्छी है। यहीं अंग्रेज लोग बसने लगे हैं। इसलिये यहाँ बसे हुए मूल निवासियों और हिन्दुस्तानियों की समस्या उठ खड़ी हुई है। दक्षिण अफ्रीका में गोरे उपनिवेश अधिक संख्या में बसे हैं। पर इन दोनों की संख्या यहाँ बसे हुए मूल निवासियों और हिन्दुस्तानियों के मुकाबले में कुछ भी नहीं है। इसी से गोरों के हाथ में शासन रखने के लिये हब्शियों और हिन्दुस्तानियों को शासन प्रबन्ध में समान अधिकार नहीं दिया है। पूर्वी अफ्रीका और दक्षिणी अफ्रीका के बीच में मीजर की ओर रोडेशिया देश है। उत्तर की ओर सूडान का बड़ा प्रदेश है।



ताम्र
प्रदेश
लुसाका
बुलावायो
रेलवे
० २०० ४०० ६००

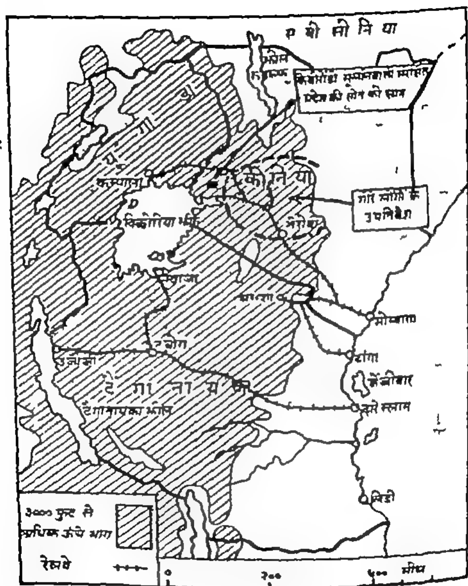
६०—रोडेशिया

१९२३-२४ ई० में ब्रिटिश गवर्नमेंट ने साउथ अफ्रीकन चार्टर्ड कम्पनी से रोडेशिया का अधिकार ले लिया। इसी समय दक्षिणी रोडेशिया को कुछ हद तक स्वराज्य मिल गया। इस समय उत्तरी रोडेशिया का कोई आर्थिक महत्व न था। इसके बाद वहाँ बेल्जियन कार्टगा के पास तांबे की विशाल खानों का पता लगा। इससे गोरे पूंजीपतियों को अपार लाभ होगा। साथ ही यहाँ के मूल निवासियों के हितों को खतरा है। इसके दक्षिण की ओर दक्षिण अफ्रीका है जहाँ गोरों के हितों को सर्व प्रधानता दी जाती है। उत्तरी रोडेशिया के कुछ गोरे उपनिवेशक ब्रिटिश पार्ल्यामेन्ट के नियन्त्रण से बचने के लिये दक्षिणी रोडेशिया से मिलाना चाहते हैं।


प्रधान रेलवे
सरक्षित राज्य
सेरोवे
ट्रा स वा ल
स्वाजीलैंड
प्रिटोरिया
ऑरेंज फ्री स्टेट
के प प्रां त
ईस्ट लंदन
डरबन
बसूटोलैंड
केपटाउन
० २०० ४०० ६०० मील

६१—दक्षिणी अफ्रीका के संरक्षित राज्य

१९०९ ई० में जब यूनियन आफ साउथ अफ्रीका (दक्षिण अफ्रीका स्वराज्य) बना तब तीनों ब्रिटिश संरक्षित राज्य ब्रिटिश सरकार के अधिकार म ही बने रहे। यह तीन संरक्षित राज्य थे बेचुआनालैंड (ब्रिटिश बेचुआनालैंड दूसरा है, वह कपकलोनी का एक भाग है) बसूटोलैंड और स्वाजीलैंड। इन में स्वाजीलैंड सबसे बड़ा है और यूनियन की उत्तरी सीमा पर स्थित है। स्वाजीलैंड और बसूटोलैंड छोटे भाग हैं और यूनियन के ही भीतर स्थित हैं। यूनियन के गोरे लोग इन तीनों प्रदेशों को अपने ही अधिकार में लेना चाहते हैं। लेकिन मूल निवासी सीधे ब्रिटिश शासन को अधिक पसन्द करते हैं। ब्रिटिश सरकार ने इन प्रदेशों को एक दम यूनियन को सौंप देने से इनकार किया। लेकिन इन प्रदेशों के आर्थिक विकास को यूनियन सरकार के हाथ में दे दिया।


कम्पाला
विक्टोरिया झील
मोम्बासा
टांगा
ज़ंजीबार
दारे सलाम
लिंडी
टैंगानायका झील
टैं गा ना य का
उजीजी
टबोरा
३००० फुट से
अधिक ऊँचे भाग
रेलवे
० २०० ५०० मील

६२—ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका

टँगानीका टेरीटरी का शासन ब्रिटिश सरकार ने मैंडेट की हैसियत से अपने हाथ में लिया। इस प्रदेश का शासन और प्रदेशों से अच्छा है। जब से यूगांडा रेलवे बनी और यूगांडा को मोम्बासा के तट से जोड़ दिया गया तब से कीनिया के ऊँचे भाग गोरे लोगों को भाने लगे। ऊँचे भाग ही कीनिया में रहने योग्य हैं। नीचे भागों में मलेरिया फैलता है। फिर क्या था यहाँ के असली रहने वाले उन अच्छे स्थानों से निकाल दिये गये और नियत (रिज़र्व) स्थानों में रक्खे गये। अच्छे स्थान गोरों के लिये खाली कर दिये गये। मूल निवासियों को जो स्थान दिये गये थे वे बहुत संकुचित थे। इसलिये उनसे ब्रिटिश सरकार ने वादा किया कि आगे किसी हालत में भी उनके स्थानों पर दखल न किया जायगा। लेकिन दैवयोग से विक्टोरिया झील के पास मूल निवासियों के नियत (रिजर्व) स्थान कावीरोंडो में सोने का पता लगा। वादा फौरन तोड़ दिया गया। कई वर्गमील ज़मीन मूल निवासियों से छीन कर फिर गोरे लोगों को दे दी गई। गोरे शासकों की इस तरह की वादाखिलाफी का मूल निवासियों पर गहरा असर पड़ रहा है।

गि नी फ्रा सी सी

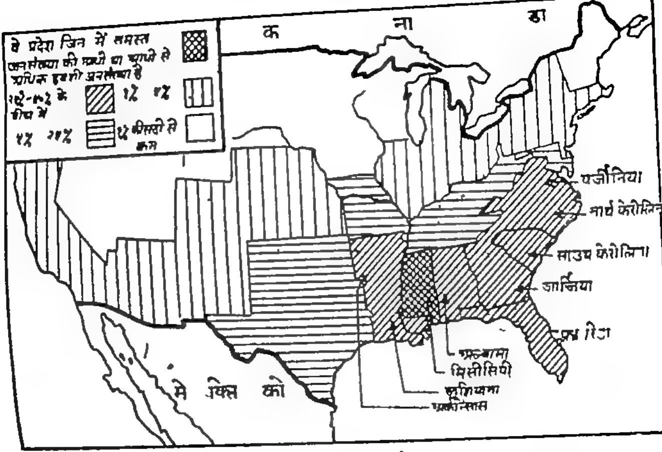
सि ओ रा लि ओ न

ला इ बे रि या

आइ व री त ट

६३—लाइबेरिया

१८१६ ई० में अमरीका के आजाद हब्शियों को बसाने के लिये लाइबेरिया उपनिवेश का आरम्भ हुआ। १८४७ ई० में इसकी उपनिवेशकों ने स्वाधीनता की घोषणा की। पर सभ्य हब्शियों की संख्या २०००० से अधिक नहीं है। इन में १२००० अमरीका से लौट कर आये हुए हैं। इनका प्रभाव प्रायः समीप प्रदेश तक ही सीमित है। भीतरी भागों में वे अधिक नहीं घुस पाये हैं। १९१८ ई० में संयुक्त-राष्ट्र अमरीका ने लाइबेरिया को ऋण दिया। इससे अमरीका का आर्थिक सलाहकार यहां आ गया। आजकल लाइबेरिया की आर्थिक सम्पत्ति एक प्रकार से अमरीका की फायर स्टोन रबर कम्पनी के हाथ रेहन है। रबर के बगीचों की दशा अधिक बिगड़ गई। उसी की जांच पड़ताल करने के लिए राष्ट्र संघ ने एक कमेटी नियत की।



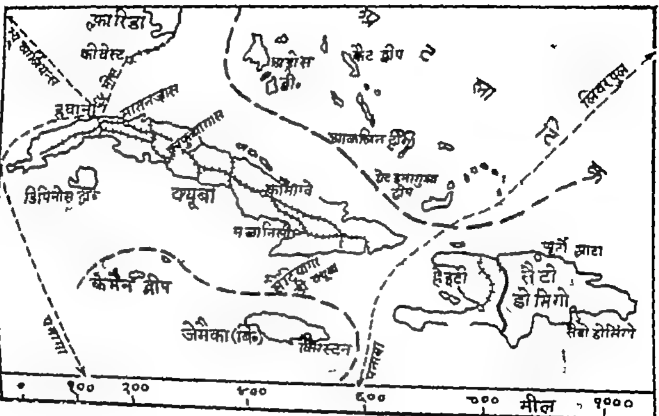
क ना डा
मे क्सि को
वर्जीनिया
नार्थ कैरोलिना
साउथ कैरोलिना
जार्जिया
मिसीसिपी

६४–संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हवशियों की समस्या

अब से लगभग चार सौ वर्ष पहले योरुप के गोरे लोग अमरीका में आये। इनकी संख्या तेज़ी से बढ़ी। लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले संयुक्त राष्ट्र अमरीका एक स्वतन्त्र राज्य बन गया। कुछ गोरे लोग दक्षिणी भाग में खेती के काम में लगे। गरमी में मेहनत से बचने के लिये उन्होंने हज़ारों हबशी गुलाम मोल लिये। आज से लगभग ८० वर्ष पहले गुलामी की प्रथा तो दूर हो गई लेकिन हबशी बने रहे। इस समय संयुक्त राष्ट्र अमरीका की लगभग दस करोड़ आबादी में सवा करोड़ हबशी हैं, जो सारी आबादी के दस फीसदी से अधिक हैं। दक्षिणी रियासतों में हबशी लोग संख्या में गोरी आबादी से कहीं कुछ अधिक कहीं वे उनके बराबर हैं। मिसीसिपी रियासत में वे (हबशी) इस समय भी अधिक (५५ फी सदी) हैं। साउथ करोलिया और कुछ दूसरी रियासतों में हबशी लोग पन्द्रह वर्ष पहले अधिक संख्या में थे। आजकल वे घट गये हैं। जहाँ हबशी लोग अधिक संख्या में हैं वहाँ उनके साथ बुरा बर्ताव किया जाता है। वे गोरों के गिरजाघरों, नाटकघरों और भोजनालय में नहीं जा सकते हैं। जो हाल नाज़ी जर्मनी में यहूदियों का है उससे कम बुरा हाल हबशियों का संयुक्त राष्ट्र अमरीका में नहीं है।

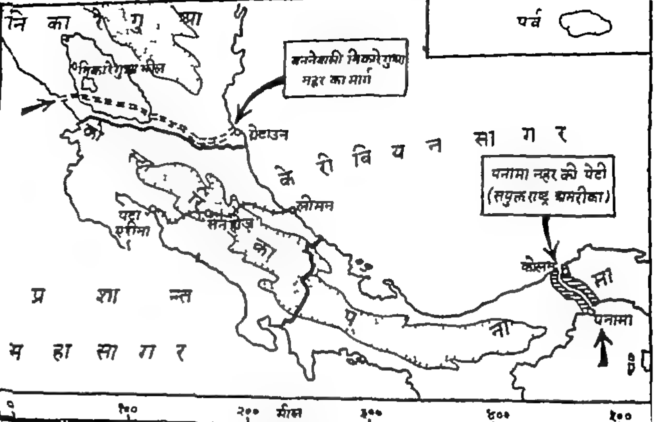
६५—संयुक्त राष्ट्र अमरीका और केरिबियन सागर

१८९८ की स्पेन की लड़ाई के बाद संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सरकार केरिबियन सागर के द्वीपों में तेज़ी से बढ़ने लगी। स्पैनिश लड़ाई के बाद पोटोरिको का द्वीप मिला लिया गया। क्यूबा प्राय संयुक्त राष्ट्र अमरीका का सरक्षित द्वीप बन गया। पनामा के नये प्रजातत्र में संयुक्त राष्ट्र अमरीका की देख-भाल होने लगी। १९०३ में केनाल का प्रदेश संयुक्त राष्ट्र को सदा के लिये मिल गया। १९१५ के हस्तक्षेप के बाद हेइटी की आर्थिक सम्पत्ति पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका की निगरानी होने लगी। सैंडोमिंगो द्वीप भी उनके सरक्षण में आ गया। १९१६ में निकारेगुआ में इतने अधिकार मिल गये कि वहाँ संयुक्त राष्ट्र का ही नियंत्रण हो गया। १९१७ ई० में संयुक्त राष्ट्र ने वर्जिन द्वीप डेन्मार्क से मोल ले लिये। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रभाव क्षेत्र के उत्तर (बहमा) और दक्षिण (अमेका) में ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकार (द्वीप) हैं।


फ्लोरिडा
कीवेस्ट
हवाना
मातनजास
क्यूबा
कामागुवे
मंजानिलो
डिपिनोस द्वीप
कैमैन द्वीप
जेमैका (ब्रि.)
किंग्स्टन
हेटी
डोमिनिगो
सैंटो डोमिंगो
मील
१००
२००
४००
६००
८००
१०००

६६—क्यूबा

प्लैट सुधार के अनुसार (जो १९२४ में रद्द कर दिया गया) संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने स्पैनिश अमरीकन लड़ाई के बाद क्यूबा पर अपना संरक्षण घोषित कर दिया। हाल में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रभुत्व के विरुद्ध क्यूबा में राष्ट्रीय विद्रोह उठ खड़ा हुआ, पर क्यूबा की आर्थिक शिकायतें और भी गहरी हैं। क्यूबा की प्रधान सम्पत्ति गन्ने की शक्कर है। लेकिन अमरीकन सरकार अपने यहां की चुकन्दर की शक्कर को प्रोत्साहन देने के लिये क्यूबा के गन्ने की शक्कर को भारी चुंगी लगाकर कम कर रही है। इससे क्यूबा का आर्थिक जीवन ही घोर संकट में पड़ रहा है।



निकारेगुआ
निकारेगुआ झील
मह्र का मार्ग
ग्रेटाउन
कै री बि य न सा ग र
पनामा नहर की पेटी
(संयुक्त राष्ट्र अमरीका)
कोलन
पनामा
को
प्र शा न्त म हा सा ग र
मील
१०० २०० ३०० ४०० ५००
पर्व

६७—पनामा और निकारेगुआ

स्पैनिश अमरीकन लड़ाई से यह स्पष्ट हो गया कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपना प्रभुत्व स्थिर रखने के लिये या तो दोनों (अटलांटिक और प्रशान्त) महासागरों के तटों पर जहाजी सेना रक्खे अथवा दोनों तटों को मिलाने के लिये वह एक नहर खोले। अन्त में दोनों महासागरों को जोड़ने के लिये एक नहर की योजना तय की गई। पनामा पहले कोलम्बिया प्रजातन्त्र का अंग था। कोलम्बिया नहर की जमीन का दाम बहुत अधिक मांगता था। १९०३ ई० में पनामा ने अपनी स्वाधीनता घोषित कर दी। दस दिन बाद संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने इसे स्वीकार कर लिया। पनामा की नई सरकार ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका को नहर बनाने के लिये ० मील चौड़ी पेटी अटलांटिक तट से प्रशान्त महासागर के तट तक सदा के लिये दे दी।

१९२६ से पनामा नहर में जहाजों की इतनी भीड़ होने लगी कि दूसरी नह की आवश्यकता प्रतीत हुई। नहर मार्ग और दोनों तटों पर जहाजी अड्डा ब ाने के लिये संयुक्त राष्ट्र ने निकारेगुआ म । ा कर ली। लेकिन निकारेगुआ की नहर बनान म ७० करोड़ डालर खर्च होंगे। प ामा नहर में नया ताल १४ करोड़ रुपये में ही बन जायगा। इसलिये निकारेगुआ की नहर बनाने का काम अभी शुरू नहीं हुआ है।



६८—प्रशान्त महासागर में जातियों का संघर्ष

१८६८ ई० में संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने हवाई द्वीप को (जो प्रशान्त महासागर के मध्य जल-मार्ग में अवस्थित स्थित है) मिला लिया। फिर उसने कुछ महीनों के बाद फिलीपाइन द्वीप और गुआम द्वीप ले लिये। इससे संयुक्त राष्ट्र अमरीका प्रशान्त महासागर की एक शक्ति बन गई। बड़ी लड़ाई के बाद प्रशान्त महासागर के जो द्वीप विषुवत रेखा के उत्तर में स्थित थे वे लीग की ओर से जापान को मिल गये। इससे जापानी अधिकार संयुक्त राष्ट्र अमरीका के उस जलमार्ग को काटने लगा जो पनामा नहर और फिलीपाइन द्वीपों के बीच में स्थित है। जहाजी सैनिकों का अनुमान है कि हवाई द्वीप से १००० मील से अधिक भाग संयुक्त राष्ट्र अमरीका बलपूर्वक नहीं बढ़ सकता है। संयुक्त राष्ट्र से अमरीका नाम मात्र को फिलीपाइन द्वीप को स्वाधीनता भले ही मिल जाय लेकिन १६४५-४६ ई० के पहले अमरीका अपना नियन्त्रण ढीला नहीं कर सकता। अगर अमरीका फिलीपाइन द्वीप को पूरा स्वाधीनता दे दे तो उसे जापान के हाथ में चले जाने का डर है। जापान की बढ़ती हुई शक्ति से ब्रिटिश साम्राज्य के हांगकांग और सिंगापुर का भी डर है। इसी तरह डच लोगों के पूर्वी द्वीप समूह का तेल भी जापान के बड़े काम का है।

[illegible]

[

६९—दक्षिणी अमरीका में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का साम्राज्यवाद

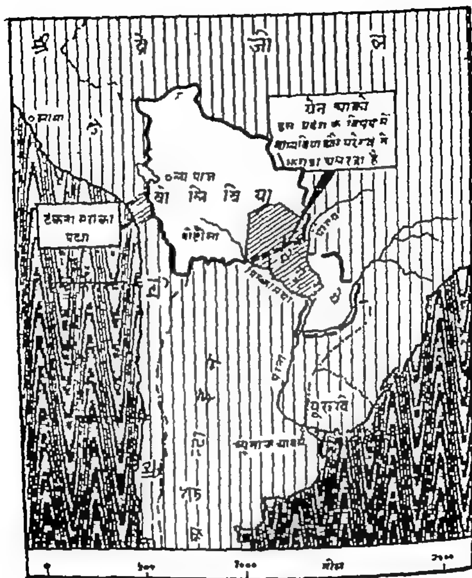
संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने जब से केरिबियन सागर की ओर बढ़ना शुरू किया है तब से दक्षिणी अमरीका की रियासतें सन्देह की दृष्टि से देख रही हैं। पनामा नहर ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के पूर्वी समुद्री प्रदेश को प्रशान्त महासागर के प्रजातन्त्र राष्ट्रों को सैकड़ों मील नज़दीक कर दिया है। मनरो डाक्ट्रिन (सिद्धान्त) के अनुसार पहले संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने योरुप के राज्यों को दक्षिणी अमरीका में हस्तक्षेप करने से रोक दिया था। हाल में इस डाक्ट्रिन के अनुसार दक्षिणी अमरीका की खटपट में हस्तक्षेप करने का एक मात्र अधिकार अपने ही ऊपर ले लिया है। दक्षिणी अमरीका में संयुक्त राष्ट्र की सब से बड़ी आर्थिक लड़ाई ब्रिटेन के साथ है। अर्जेण्टाइना में यह आर्थिक लड़ाई और भी अधिक विकट है। यहां सब से अधिक व्यापारिक उन्नति हुई है। १९३३ की सन्धि से अर्जेण्टाइना ने ब्रिटेन को कई व्यापारिक सुविधायें कर दी हैं। लेकिन समस्त दक्षिणी अमरीका में १९१३ से १९२७ तक ब्रिटेन का निर्यात (ब्रिटेन से यहाँ आने वाला माल) २२ फ़ीसदी से घटकर १६ फ़ी सदी रह गया। इसी बीच में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का निर्यात यहां २५ फ़ी सदी से बढ़ कर ३८ फ़ी सदी हो गया।

ला पाज
बो लि वि या
ग्रेन चाको

७०—बोलिविया और पेरेग्वे की लड़ाई

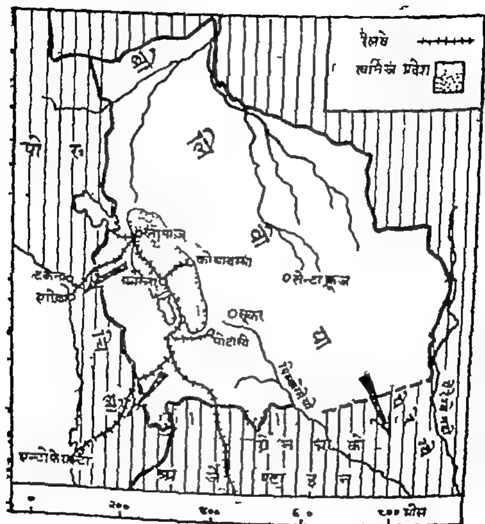
बोलिविया और पेरेग्वे दक्षिणी अमरीका में दो ऐसे भीतरी प्रजातन्त्र राष्ट्र हैं जो किसी समुद्र तट को नहीं छूते हैं। १९३२ में इन दोनों राष्ट्रों के बीच में लड़ाई शुरू हुई। इसका अन्त १९३५ के जून की क्षणिक सन्धि से हुआ। यह लड़ाई ग्रेनचाको प्रदेश के लिये हुई थी। एन्डीज की उच्च पर्वत श्रेणी ने बोलिविया को प्रशान्त महासागर तट तक पहुँचने का मार्ग दुर्गम बना दिया है। बोलिविया वाले परना और पेरेग्वे नदियों द्वारा अटलांटिक महासागर तक पहुँचने के लिये सुगम जलमार्ग चाहते हैं। पेरेग्वे देश वाले बोलिविया का कुछ प्रदेश चाहते हैं। जब से ग्रेनचाको में मिट्टी का तेल मिला है तब से दोनों देशवाले इसको चाहने लगे हैं। लड़ाई में जिन देशों के गोला बारूद और दूसरे सामान की बिक्री होती है वे चाहते थे कि उनका सामान बिकता रहे। इस-लिये और भी यह लड़ाई इतने अधिक समय तक जारी रही।

एक समय बोलिविया ने टेकनाएरिका प्रदेश पर अपना अधिकार प्रगट किया। इससे समुद्र तट तक उसकी पहुँच हो जाती। लेकिन १९२९ के समझौते से यह टेक नाएरिका प्रदेश पीरू और चिली ने आपस में बांट लिया।



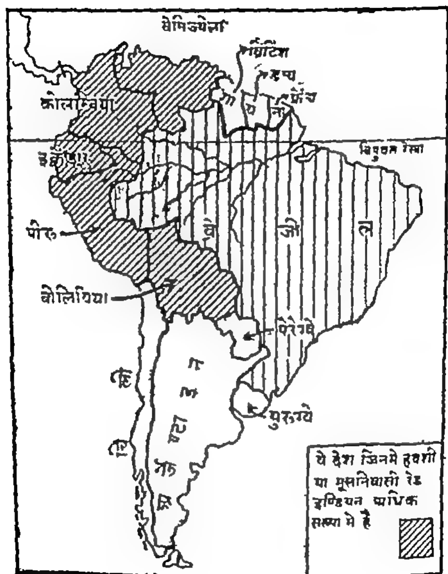
७१—बोलिविया

खनिज सम्पत्ति की दृष्टि से नई दुनिया में संयुक्त राष्ट्र अमरीका और मेक्सिको के बाद तीसरा नम्बर बोलिविया का ही है। दुनिया भर में जितनी टीन निकलती है उसकी एक चौथाई बोलिविया में होती है। चीन के बाद सुरमें की उत्पत्ति के लिये संसार में दूसरा स्थान बोलिविया का ही है। यहां चाँदी और सीसा भी काफी निकलता है। बाहर भेजने के लिये बोलिविया की यह सब खनिज सम्पत्ति चिली के एरिका और एण्टोफेगास्टा बन्दरगाहों को भेजी जाती है। दूसरा मार्ग पेरेग्वे नदी के द्वारा अटलांटिक तट के लिये हो सकता है। इसीलिये पेरेग्वे देश से लड़ाई छिड़ी। बोलिविया में मूलनिवासी इण्डियन लोगों की अधिकता है। उनकी बड़ी विकराल ग़रीबी है। बोलिविया में एक ओर खनिज सम्पत्ति की अधिकता है दूसरी ओर ग़रीब लेकिन [illegible] कट्टे मज़दूरों से पूंजीपति लोग पूरा लाभ उठाने की धुन में हैं।


रेलवे
खनिज प्रदेश
पीरू
सेन्टा क्रूज
पोटोसी

७१—बोलिविया

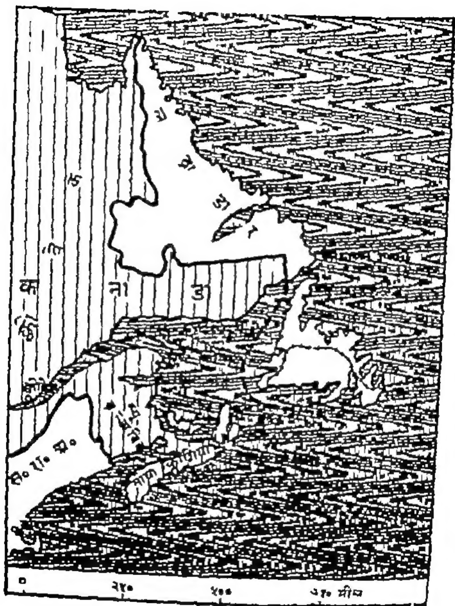
खनिज सम्पत्ति की दृष्टि से नई दुनिया में संयुक्त राष्ट्र अमरीका और मेक्सिको के बाद तीसरा नम्बर बोलिविया का ही है। दुनिया भर में जितनी टीन निकलती है उसकी एक चौथाई बोलिविया में होती है। चीन के बाद सुरमे की उत्पत्ति के लिये संसार में दूसरा स्थान बोलिविया का ही है। यहां चाँदी और सीसा भी काफ़ी निकलता है। बाहर भेजने के लिये बोलिविया की यह सब खनिज सम्पत्ति चिली के एरिका और एन्टोफेगस्टा बन्दरगाहों को भेजी जाती है। दूसरा मार्ग पेरेग्वे नदी के द्वारा अटलान्टिक तट के लिये हो सकता है। इसीलिये पेरेग्वे देश से लड़ाई छिड़ी। बोलिविया में मूलनिवासी इंडियन लोगों की अधिकता है। उनकी बड़ी विकराल गरीबी है। बोलिविया में एक ओर खनिज सम्पत्ति की अधिकता है दूसरी ओर गरीब लेकिन हट्टे कट्टे मजदूरों से पूंजीपति लोग पूरा लाभ उठाने की धुन में हैं।



कोलम्बिया
पीरू
बोलिविया
ब्रे जी ल
विषुवत रेखा
पेरेग्वे
युरुग्वे
वे देश जिनमे हबशी या मूलनिवासी रेड इण्डियन अधिक संख्या मे है

७२–दक्षिणी अमरीका की जातियाँ

गायना में योरुपीय पूँजीपति और शासकों ने यहाँ की आर्थिक सम्पत्ति से लाभ उठाने के लिये अपने उपनिवेश बहुत पहले से बनाये हैं। यहाँ मूलनिवासियों के साथ चीनी, हिन्दुस्तानी और हबशी लोग भी काफी तादाद में पहुँच चुके हैं। इनके अतिरिक्त कोलम्बिया, यूक्वेडार, पीरू और बालिविया के चार खनिज प्रधान प्रजातन्त्र राष्ट्रों में भी मूलनिवासियों की अधिकता है। ये बहुत सस्ती मजदूरी पर काम करने के लिये तयार हो जाते हैं। वेनिज्वेला और गायना में हबशी और मुलाटो वर्णसंकर लोगों की अधिकता है। ब्रेजिल में मुलाटो के अतिरिक्त गोरे और मूलनिवासी इण्डियन लोगों की जन-संख्या प्रायः बराबर है। शीतोष्ण प्रदेश के चार प्रजातन्त्र राष्ट्रों (चिली, अर्जेण्टाइना, यूरुग्वे और पेरेग्वे) में मूलनिवासी घटते घटते अल्पसंख्या में रह गये हैं। गोरों की प्रधानता हो गई है।


० २५० ५०० ७५० मील

७३—न्यूफाउंडलैंड

न्यूफाउंडलैंड का शासन प्रबन्ध कनाडा से अलग है। न्यूफाउंड से ही पड़ोस का लबाडार प्रदेश मिला हुआ है। १९२७ ई० में प्रिवी काउंसिल ने कनाडा के क्वीबेक प्रान्त और लब्राडार की सीमा निर्धारित की थी। लब्राडार में केवल ४२६४ मनुष्य रहते हैं। न्यूफाउंडलैंड की जनसंख्या लगभग २ लाख है। प्रधान सम्पत्ति मछली और लकड़ी है, लेकिन यहाँ की सरकार घाटे से चलती थी। न्यूफाउंडलैंड के दिवालियेपन की जाँच करने के लिये १९३२ के नवम्बर मास में एक रायल कमीशन बैठा। इस कमीशन ने सिफारिश की है कि न्यूफाउंडलैंड से प्रतिनिधि संस्थायें उठा ली जावें और इसका शासन-भार ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त किये गये एक कमीशन को सौंप दिया जावे।